शिव आमंत्रण

RAJHIN 16601/20/1/2013-TC

वर्ष: 01, अंक: 06 | विश्व शांति पर विशेष | RAJHIN 16601/20/1/2013-TC | हिन्दी (मासिक), 1 नवंबर 2013, सिरोही, पृष्ठ: चार, मूल्य: पांच रुपए

विश्व शांति के 'महानायक'

पिताश्री ब्रह्मा बाबा — परमपिता शिव परमात्मा के साकार माध्यम, ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक

सन् 1936 में दादा लेखराज को हुए कई साक्षात्कार, 1937 में परमात्मा के आदेशानुसार ओम-मंडली की स्थापना

इस दुनिया में कुछ लोग इतिहास बनाते हैं तो कुछ लोग ऐसे कर्म कर जाते हैं जो स्वयं इतिहास बन जाते हैं। वह अपने पीछे ऐसे निशान छोड़ जाते हैं जो करोड़ों लोगों के लिए मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक और प्रेरणास्त्रोत बन जाते हैं। ऐसी महान, तपस्वी, पुण्यात्मा, दिव्यगुणों से संपन्न, नई दुनिया के आधार स्तम्भ बने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। जिन्हें स्वयं परमपिता शिव परमात्मा ने अपना आधार स्तम्भ बनाया, उनके शरीर रूपी रथ का उपयोग किया। साथ ही सृष्टि के नवनिर्माण की आधारशिला रखी। आइए जानते हैं दादा लेखराज कैसे प्रजापिता ब्रह्मा बने और विश्व शांति के महानायक।

व्यापारिक जीवन में भी वे अपनी ही सूझबूझ

माउण्ट आबू. कहते है पूत के लक्षण पालने में ही दिखाई देते हैं। सन् 1876 में सिंध के कृपलानी परिवार में एक बालक का जन्म हुआ। जिसका नाम रखा गया लेखराज। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि आगे चलकर यह बालक परमपिता शिव परमात्मा के रथ के रूप में नई सतयुगी दुनिया के स्थापना के कार्य में युगपुरुष की भूमिका निभाएगा।

लेखराज के माता-पिता वल्लभाचारी भक्त थे। वह एक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे। वहीं माता भी नारायण की अनन्य भक्त थी। उनकी सुबह भक्ति से शुरू होती थी और रात भी भक्ति में खत्म होती थी। लेखराज के माता-पिता का क्षेत्र में काफी प्रभाव था और लोग उन्हें आदरभाव देते थे। लेखराज को भक्तिभाव के संस्कार बचपन में ही विरासत के रूप में मिले।

बचपन में ही उठ गया माता का साया

लेखराज को माता-पिता की पालना ज्यादा समय तक नहीं मिली। बचपन में ही उनकी माता का निधन हो गया। और कुछ समय बाद पिता का साया भी सिर से उठ गया। उसके बाद उनकी पालना चाचा ने की। चाचा गेहूं के व्यापारी थे। इस तरह लेखराज भी व्यापार में चाचा के साथ हाथ बंटाने लगा।

लेखराज में ईमानदारी और दयाभाव इतना था कि वह गेहूं तौलते समय ज्यादा गेहूं तौलते थे। वहीं कोई गरीब ग्राहक आ जाता तो उसे मुफ्त में भी गेहूं दे देते थे। जिसके चलते उन्हें कई बार चाचा की डांट भी खानी पड़ जाती थी।

गेहूं के व्यापारी से बने प्रसिद्ध जौहरी

लेखराज की बुद्धि बचपन से ही तीक्ष्ण व कुशाग्र थी। जिसके चलते वह कुछ ही समय में गेहूं के एक छोटे से व्यापारी से प्रसिद्ध जौहरी बन गए। उन्हें हीरे-जवाहरातों की अचूक परख थी। अपने ईमानदारी और सच्चाई के गुण के कारण लेखराज राजाओं-महाराजाओं से लेकर धनाढ्य व्यक्तियों में प्रसिद्ध हो गए। लेखराज का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था जो एक बार उनके संपर्क में आता वह सदा उनका गुणगान करता।

तत्कालीन वाईसराय आदि से भी उनका मेल-मिलाप था और नेपाल के राज्यकुल तथा उदयपुर के महाराजा का उन्हें विशेष आतिथ्य और स्नेह-सम्मान प्राप्त था और वे उनके राज दरबार में भी आमंत्रित होते थे। कई बार तो राजा लोग उन्हें कहते थे-लखीराम बाबू, भगवान से तो भूल हो गई जो हमको राजा बनाया, परंतु आपको नहीं बनाया। राजापन के सभी संस्कार तो आप में हैं। वास्तव में भगवान ने भूल नहीं की थी,क्योंकि वे राजे तो एक ताज वाले राजा थे जबकि भगवान ने दादा को दो ताज वाला दैवी राजा बनने का पुरुषार्थ कराया।

दादा को हीरे की थी अचूक परख

सुंदर शारीरिक रचना और उच्च कोटि के संस्कार होने के अतिरिक्त दादा की बुद्धि भी असाधारण थी। वे अपनी मेधावी बुद्धि के आधार पर तीव्र रफ्तार से उन्नति की ओर आगे बढ़े। जवाहरात का धंधा बहुत ऊंचा धन्धा माना जाता है और जवाहरात को पहचानने की अचूक बुद्धि हरेक को प्राप्त नहीं होती है। दादा हीरों के ऐसे निपुण पारखी थे कि वे हीरों की पुड़िया को देखते ही उसका मूल्य एक मिनट में बता देते कि व्यापारी दंग रह जाते थे। व्यापारी स्वयं जो हीरे आदि खरीदते थे, उसका भी मूल्य कराने के लिए वे दादा के पास ले आते थे।

सभी के प्रति कल्याण की भावना

दादा में धर्म, जाति, देश, भाषा आदि के आधार पर भेदभाव नहीं था। उनके मन में कभी किसी के प्रति वैर या विरोध की भावना का आविर्भाव नहीं हुआ। हमेशा सभी के प्रति कल्याण की भावना रहती थी। दादा अक्सर कहते थे मैं बेगर से प्रिंस बना हूं। दादा की पारखी बुद्धि एवं असामान्य सूझ के कारण परमपिता परमात्मा शिव ने उनके तन में प्रवेश किया क्योंकि वह भी इस सृष्टि पर नर-नारी के जीवन को कौड़ी-तुल्य से बदलकर हीरे तुल्य बनाने के लिए आते हैं।

परमात्मा को पाने बनाए बारह गुरु

दादा लेखराज को भगवान को पाने की चाह इतनी प्रबल थी कि उन्होंने बारह गुरु बनाए हुए थे। वह अपने गुरुओं का बहुत ही सम्मान और आदर करते थे। घर पर गुरुओं के आगमन पर वह स्वयं ही उनकी सेवा करते और उनके द्वारा बताई गई हर बात को मानते। उनका मानना था कि गुरु ही भगवान से मिला सकते हैं। बिना गुरु के भगवान को नहीं पाया जा सकता है। उनकी गुरु में अनन्य श्रद्धा थी। जब दादा को परमात्मा का पहली बार साक्षात्कार हुआ तो उन्होंने समझा कि गुरु ने ही उन्हें यह साक्षात्कार कराया है, लेकिन जब उन्होंने यह बात गुरु को बताई तो गुरु समझ गए कि ये तो भगवान की ही लीला है। भगवान ने ही उन्हें साक्षात्कार कराया है।

कभी नहीं टालते गुरु की आज्ञा

वे गुरु की हर आज्ञा को हर हालत में शिरोधार्य मानते थे। चाहे कुछ भी घटित क्यों न हो जाएं लेकिन वो गुरु की आज्ञा नहीं टालते थे। इसका पता इस घटना से चलता है कि एक बार उनके पोते का नामकरण संस्कार होना था। सायंकाल का समय था उस समय शहर के बड़े-बड़े व्यक्ति भोज के लिए उपस्थित थे। अचानक ही गुरु का तार आया कि तुरंत आओ। दादा ने अपनी पत्नी को कहा कि तुरंत कपड़े निकालो और ड्राइवर को बुलाओ क्योंकि मुझे जाना है। तब उनकी पत्नी ने कहा कि इस अवसर पर कैसे जा सकते हैं। तब दादा ने बहुत ही गूढ़ उत्तर दिया और कहा कि गुरु का बुलावा गोया काल का बुलावा है। काल आए तो क्या हम उसे ऐसा कहकर रोक सकते हैं कि आज हमारे पोते का नामकरण है। गुरु के प्रति ऐसी निष्ठा, भक्ति और सम्मान देखकर वहां उपस्थित लोग आश्चर्यचकित रह गए।

तीर्थयात्रा में थी विशेष रुचि

दादा को अमरनाथ, हरिद्वार, प्रयाग, वृंदावन, काशी आदि की यात्रा में विशेष रूचि थी और साधु-संन्यासियों को अपने यहां ठहराने में उन्हें बहुत खुशी होती थी। अपने लौकिक गुरु में उनकी बड़ी श्रद्धा थी और उनके स्वागत, सत्संग तथा आतिथ्य पर वे हजारों रुपया खर्च कर देते थे। एक बार की बात है उनके गुरु अपनी बहुत बड़ी शिष्य-मंडली को लेकर दादा के घर आए। दादा ने बहुत ही आदर से उनका स्वागत किया। उनमें गुरु भक्ति इतनी थी कि उन्होंने गुलाब जल की बोतलों की कई पेटियां मंगवाई। जिसे प्रात: और शाम दोनों समय छिड़का जाता था। फिर इसके पश्चात अगरबत्ती जलाई जाती थी। उन्हें गुरु के आराम का भी बहुत ध्यान रहता। कहीं आवारा कुत्तों की आवाज से गुरु के आराम में खलल न पड़े, इस ख्याल से वे एक पहरेदार रखते थे। आम का मौसम न होने के कारण बाजार में चार रुपए का एक आम मिलता, तो भी वह गुरु के लिए ले आते थे।

बाबा से हुआ श्रीकृष्ण का साक्षात्कार

बाबा शांति से रहने के लिए हम बच्चों को सदा यही शिक्षा देते थे कि यदि हमारे पास दुनिया का पूरा वैभव और सुख-साधन उपलब्ध हो, लेकिन शांति न हो तो हम भी आम आदमी की ही तरह हैं। संसार में मनुष्यों द्वारा जितने भी कार्य या उद्यम किए जा रहे हैं सबका एक ही उद्देश्य है शांति। सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिए कि शांति क्या है...? शांति का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम कुछ न बोले, अपितु मन का चुप रहना सुख-शांति का आधार है। कहा भी जाता है कि जहां शांति है वहां सुख है अर्थात् सुख और शांति का आपस में गहरा नाता है। एक के बिना दूसरे की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हम यही सोचते रह जाते हैं कि यह कर लूंगा तो शांति मिल जाएगी। आवश्यकताओं को पूरा करते-करते पूरा समय ही निकल जाता है और न तो शांति मिलती है और न ही खुशी। इसलिए अमूल्य शांति के लिए सबसे पहले हमें अपने आपको देखना होगा, अपने बारे में जानना होगा कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और हमारे अंदर कौन-कौन सी शक्तियां हैं। जिसे हम अपने अंदर ही प्राप्त कर सकते हैं। ब्रह्मा बाबा हमेशा कहते थे कि बच्ची आप सभी का एक-एक कर्म ऐसा हो जो सभी के लिए आदर्श बन जाए। शांतिदूत भाई-बहनें आज विश्व के 137 देशों में विश्व शांति का संदेश दे रहे है।

राजयोगिनी दादी जानकी,
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू, राजस्थान

हर पल रहती थी विश्व शांति की फिक्र

दुनिया में तो लोग अपने परिवार की सुख-शांति की चिंता में ही लगे रहते हैं लेकिन विश्व में एक ऐसे व्यक्ति भी हुए जिन्हें हर पल अपने परिवार से बढ़कर विश्व में सुख-शांति की फिक्र रहती थी। उनकी यह फिक्र उनके हर कार्य में स्पष्ट दिखाई देती थी। वे जिससे भी मिलते थे उनको यही स्मृति दिलाते थे कि शांति के सागर परमात्मा को याद करो। तभी विश्व में शांति स्थापन होगी। वे स्वयं के लिए तो प्रार्थना करते ही थे, साथ ही साथ विश्व की हर आत्मा के सुख-शांति की कामना करते थे।

श्रीनारायण के थे अनन्य भक्त

बचपन से ही था भक्तिभाव, श्रीमद्भागवत गीता थी दिनचर्या में शामिल

दादा बाल्यकाल से ही श्री नारायण के अनन्य भक्त थे। श्री नारायण की स्मृति उन्हें इतनी प्रिय थी कि वे अपने पूजा-पाठ के कक्ष के अतिरिक्त श्री नारायण का चित्र अपने शयनागार में और अपने सिरहाने के नीचे भी रखते थे। उनकी तिजोरी और जेब में भी श्री नारायण का चित्र हमेशा रखा रहता था।

स्वयं चित्रकार से बनवाते थे चित्र

बाजार में जो श्री नारायण के छपे हुए चित्र प्राय: मिलते थे, उनमें श्री नारायण को लेटे हुए और श्री लक्ष्मी को उनके चरणों की दासी के तौर पर पांव दबाते हुए चित्रित किया हुआ होता है। उन्हें ये चित्र पसंद न थे क्योंकि वे इस चित्र को ऐसे समाज का प्रतीक मानते थे जिसमें स्त्री को गौण, दासी-जैसा अथवा तिरस्कार-युक्त स्थान दिया जाता हो। इसलिए वे चित्रकार से ऐसा चित्र बनवा लेते थे जिसमें कि लक्ष्मी का दासी-भाव अंकित न हो। दादा का भक्ति-भाव इतना परिपक्व था कि व्यापार या घर की कैसी भी परिस्थिति हो, वे एक दिन भी भक्ति और पाठ के नित्य नियम से नहीं चूकते थे। चाहे वे रेल-यात्रा कर रहे हो तो भी वे श्रीमद्भगवदगीता का पाठ अवश्य करते थे, क्योंकि गीता में उनकी अनन्य श्रद्धा थी। जिन राजा-महाराजाओं तथा धनाढ्य व्यक्तियों के साथ दादा का हीरे-जवाहरात का व्यापार था, वे कई बार उनके यहां अतिथि बनकर आते और उनकी गाड़ी के पहुंचने का समय कई बार वही होता था, परंतु फिर भी दादा भक्ति और पाठ को नहीं छोड़ते थे।

रहन-सहन और खान-पान था सात्विक

दादा का खान-पान और रहन-सहन सात्विक था। जब कभी वे मित्रों को भोज या पार्टी देते तो उसमें सिगरेट, शराब आदि की गंध भी नहीं होती थी। दादा द्वारा दिए गए भोज में सम्मिलित होने वाले राजा तथा रईस लोग कई बार सिगरेट, शराब आदि को न पाकर विनोदपूर्ण लहजें में कहते - दादा, आपकी पार्टी फीकी रही। परंतु दादा मुस्कराते हुए उत्तर देते कि आपके लिए हम अपना धर्म थोड़े ही भ्रष्ट करेंगे। आप तो हमें कागज के नोट देते हैं, परंतु हम तो उनके बदले में आपको हीरे देते हैं। ये सुनकर वे लोग हंस पड़ते।

आज भी जारी है महाअभियान — शुभ बायब्रेशन द्वारा दुखी, अशांत मनुष्यात्माओं को शांति का सहयोग

विश्व शांति के लिए सामूहिक ध्यान

माउण्ट आबू. कहा जाता है कि हम जैसा सोचते है वैसा ही बन जाते है और उसी अनुसार हमें आसपास का वातावरण नजर आता है। आज विश्व में बढ़ती अशांति और मानसिक समस्याओं को देखते हुए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा योग के माध्यम से शुभ संकल्पों द्वारा सारे विश्व को सकाश (शुभ संकल्प) दिया जाता है। संस्था के लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनें अपने-अपने सेवाकेंद्र पर हर महीने के तीसरे रविवार को शाम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक विश्व शांति के लिए सामूहिक योग करते हैं। इस दौरान योग से विश्व को शांति और सकारात्मक बायब्रेशन दिए जाते हैं। योग के दौरान संस्था के साधक भाई-बहनें परमात्मा से शक्ति लेकर सारे विश्व और वातावरण में शांति के प्रकम्पन देते हैं। ताकि अशांत, दुखी और समस्या से ग्रस्त मनुष्यों को शांति मिल सके।

प्राकृतिक आपदा में योग से सहयोग

विश्व में जब भी कोई प्राकृतिक आपदा आती है तब भी विशेष मेडिटेशन (योग) का प्रोग्राम रखा जाता है। योग से दु:खी आत्माओं के लिए शांति का योगदान दिया जाता है। जिससे वे अपने दु:खों से जल्द से जल्द उबर सकें।

जब सभी लोग मिलकर शांति के प्रकम्पन फैलाते हैं तो वहां के आसपास का वातावरण एक गहन शांति से भर जाता है। उस वातावरण में प्रवेश करते ही व्यक्ति को गहन शांति की अनुभूति होती है। भारत में आए सुनामी, बाढ़, उत्तराखंड जैसी प्रकृति आपदा के समय संस्था के ब्रह्माकुमार भाई-बहनों द्वारा समय-समय पर सामूहिक योग के कार्यक्रम रखे जाते हैं। हाल ही में उत्तराखंड आपदा के समय संस्था के ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने कई दिनों तक सामूहिक योग रखकर आपदा में पीड़ित लोगों के सुख-शांति के लिए योग के माध्यम से शांति व दुखों से उबरने के लिए शुभ बायब्रेशन दिए। साथ ही ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के द्वारा प्रतिदिन विश्व शांति के लिए योग का दान दिया जाता है।

संस्था के ब्रह्माकुमार भाई-बहनें विश्व शांति के लिए सामूहिक रूप से विश्व को शांति के प्रकम्पन देते हुए।

विश्व में शांति क्यों जरूरी है?

मानवीय मूल्यों का पतन, भौतिकवाद, दिनोंदिन बढ़ती स्पर्धा, नशा, भ्रष्टाचार, शोषण, फैशन, दिखावा के चलते आज प्रत्येक मनुष्य अशांति, निराशा, अवसाद, भय, चिंता, डर के माहौल में जी रहा है। दुनिया में विकारों का बढ़ता प्रभाव और नकारात्मक ऊर्जा ने मनुष्य के जीवन में अशांति ला दी है। अत: दुनिया में फिर से रामराज्य स्थापन करने, मानवीय मूल्यों की स्थापना और जीवन को आनंदमय, सुखी और शांत बनाने के लिए शांति बेहद जरूरी है। शांति हमें बाहरी चीजों से नहीं मिल सकती है वह तो हमारे गले का हार है। प्रत्येक आत्मा वास्तविक रूप में शांतस्वरूप है। शांति तो हमारा निजी गुण है। सभी शांति से जीना चाहते हैं किसी को भी अशांति पसंद नहीं होती है। अत: अज्ञान अंधकार में फंसी दुनिया को विकारों से मुक्त करने एवं पावन दैवी राज्य की स्थापना करने अब स्वयं शांति के सागर परमात्मा शिव आकर के हमें सच्चा गीता ज्ञान, और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं।

संपादकीय

बीके करुणा

विश्व शांति के प्रणेता

दुनिया का प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि वह जहां भी रहता है, उसके आसपास, समाज और देश का वातावरण शांतिमय हो। शांति वास्तव में सुव्यवस्थित और बेहतर समाज का पर्याय मानी जाती है। जिस स्थान के लोगों में शांति होगी, नि:संदेह वहां के वातावरण में, परिवेश में शांति का माहौल होगा। लेकिन इसकी पहल और मार्गदर्शन के लिए सही मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। दुनिया के कालान्तर में समय प्रति समय बदलाव होते रहे हैं। जहां से समय ने एक करवट बदली और नए युग की शुरुआत हुई। सृष्टि चक्र के बदलाव में एक ऐसा वक्त भी होता है जब दुनिया के नियंता एक बेहतरीन दुनिया बनाने के लिए एक महामानव को इसका सूत्रधार बनाते हैं। एक ऐसा सूत्रधार जो मनुष्य के शरीर में होते हुए भी दिव्य और अलौकिक आभा से परिपूर्ण हो। अस्सी के दशक में जब देश व दुनिया में मानवता के पतन की स्थिति निम्न स्तर के साथ उथल-पुथल के दौर से गुजर रही थी। तब दादा लेखराज के नाम से पहचाने जाने वाले प्रसिद्ध जौहरी को परमात्मा ने उनके अतीत का परिचय कराते हुए समस्त मानव जाति के उद्धार का आधार बनाया। जिस दौर में यह सिलसिला प्रारम्भ हुआ उस समय विज्ञान की विनाशक ज्वालामुखी से संसार में एक भय और त्रासदी का माहौल था। यह बिल्कुल उचित वक्त था जब विश्व शांति के महाभियान की नींव पड़ी। इस कार्य को केवल दादा लेखराज को ही नहीं बल्कि पूरे वैश्विक समुदाय के लोगों के लिए यह असंभव सा प्रतीत हो रहा था। परन्तु प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने प्रत्येक मनुष्यात्माओं को खुद के अन्दर शांति विकसित करने का मंत्र दिया। बाबा को यह मालूम था कि जब तक व्यक्ति खुद के अन्दर शांति का विकास नहीं करेगा। तब तक विश्व में शांति की बात बेमानी होती रहेगी। क्योंकि जब व्यक्ति शांति के मार्ग पर चलता है तो उससे निकलने वाले प्रकम्पन धीरे-धीरे लोगों एवं वातावरण के अन्दर समाहित होते हैं। परमपिता शिव परमात्मा के आदेशानुसार बाबा ने समाज से तिरस्कारित महिलाओं को आगे कर विश्व शांति का अभियान छेड़ दिया। इस अभियान में अनेक बाधाएं भी आई, लेकिन जिसका रक्षक स्वयं परमात्मा हो उसका कौन क्या बिगाड़ सकता है। ये बाधाएं बाबा के लिए कागज के समान लगी। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने माताओं-बहनों के सिर पर ताज रखा। शिव शक्तियों ने भी बाबा के विश्वास को सही साबित करते हुए परमात्मा के सृष्टि परिवर्तन के महान कार्य का संदेश विश्व फलक तक पहुंचाया। आज पूरे विश्व में लाखों लोग इस अभियान के यात्री हैं और दुनिया में विश्व शांति का प्रयास अपने मुकाम की ओर तेजी से बढ़ता जा रहा है। इसके प्रणेता प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने 18 जनवरी, 1969 को इस दुनिया से विदा हो गए, लेकिन विश्व शांति का यह महान कार्य आज भी अनवरत जारी है।

परमात्म बगीचे के अलौकिक माली

600 करोड़ मनुष्यात्माओं में वही आत्माएं धन्य हैं, जिन्होंने बाबा के साकार माध्यम द्वारा कल्प के बाद पुन: अवतरित हुए अपने पारलौकिक पिता परमात्मा शिव को जाना, पहचाना और उनके साथ संबंध जोड़कर अपना ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त किया।

मेरी कलम से

बीके निर्वैर भाई

लेखक: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्य महासचिव है।

Email: nirwair@bkivv.org

मैं ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में 1 फरवरी 1960 को एक विद्यार्थी के रूप में आया था। उस समय मैं भारतीय नौसेना में रेडियो-राडार इंजीनियर था। यहां ज्ञान और योग की प्रैक्टिकल शिक्षा होने के कारण इसका प्रभाव मैंने पहले दिन से ही अनुभव किया। ब्रह्माकुमारी संस्था चैतन्य फूलों का बगीचा है। जिसमें मनुष्यात्माएं फूलों के समान हैं और उसका माली स्वयं परमपिता परमात्मा है और वो ब्रह्मा के द्वारा इसकी देख-रेख करते हैं।

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा एक ऐसे माली थे जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय नामक चैतन्य एवं विविध प्रकार के फूलों का बगीचा बनाने के निमित्त बनें और अपने पार्थिव शरीर के त्याग के अंतिम क्षणों तक भी इस अनुपम बगीचे को ईश्वरीय ज्ञानामृत से सींचते रहे। आज भले ही वो हमारे बीच साकार रूप में नहीं है, लेकिन उनके द्वारा सुसज्जित यह चैतन्य फूलों का बगीचा अपने रूहानी खुशबू से सारे विश्व को एक नई प्रेरणा दे रहा है।

इस चैतन्य बगीचे के फूल हम आत्माएं अपने-अपने अनुभव से यह जानते हैं कि पुरुषोत्तम संगमयुग में बागवान और माली दोनों एक ही तन में प्रवेश हो अपने बगीचे में आते हैं। निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव इस बगीचे के बागवान हैं और पिताश्री ब्रह्मा बाबा इसके माली। दोनों का रथ एक ही है ब्रह्मा तन। जिस पर विराजमान हो अपने प्यारे बच्चों से मुलाकात करने आते हैं और उन्हें परमात्मिक प्यार देकर उनमें आत्मिक बल भरते हैं। जिससे चैतन्य फूलों में दिव्य गुणों की धारणा से ऐसे सुगंधित बन जाएं जो जहां भी जाए दिव्यगुणों की ही खुशबू फैलाएं और इन्हें देखकर लोग यही कहें कि ये तो अल्लाह के बगीचे के फूल हैं।

परमात्मा का यह बगीचा बड़ा ही सुंदर और भिन्न-भिन्न धर्मों, देशों व भाषा वाले चैतन्य फूलों से सजा हुआ है। यूं तो सारी सृष्टि ही परमात्मा का बगीचा है, लेकिन कलियुग के अंत में यह संसार एक जंगल के समान बन गया है। जिसमें नैतिक मूल्य निम्न से निम्न स्तर पर पर पहुंच गए। इन्हीं कांटों व पतितों को स्वयं परमात्मा ईश्वरीय ज्ञान व योगबल से सींचकर बड़े ही सुंदर, सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म: देवी-देवता के रूप में चैतन्य फूल बना रहे हैं।

आबू स्थित पांडव भवन में स्वयं परमात्मा ने जड़ फूलों का एक चैतन्य बगीचा तैयार किया। जो आज भी उनकी स्मृति दिलाता है। ब्रह्मा बाबा जब भी इस बगीचे में जाते थे तो वे फूलों को बड़े ही प्यार से निहारते थे। वे स्वयं को और दूसरों को भी उस जैसा बनने का पुरुषार्थ कराते थे। बाबा अक्सर बच्चों से पूछते थे कि आप कौन से फूल हो? किंग ऑफ फ्लावर हो, सदा गुलाब हो, मोतिया हो, कली हो या अक के फूल हो? जैसे मुरझाई कलियां और फूल अपने माली व बागवान को देख नाच उठते हैं, मुस्कराने लगते हैं वैसे ही ब्रह्मा बाबा जब अपने चैतन्य फूलों को मुस्कराते हुए रूहानी प्रेम से भरे हुए देखते थे तो हम बच्चे भी परमात्मा की पवित्र दृष्टि पड़ते ही खुशी में खिल उठते थे।

विश्व की सर्वोच्च हस्तियां, एक परमपिता परमात्मा शिव और दूसरे प्रजापिता ब्रह्मा के एक ही रूप में दोनों परम हस्तियों से मिलना कौन नहीं चाहेगा। वस्तुत: यही तो वास्तविक सौभाग्य है। जिस इच्छा की पूर्ति जन्म-जन्मांतर से भक्ति मार्ग में भी न हो सकी, वह अब सहज ही पूर्ण हो गई। परमात्मा और ब्रह्मा बाबा दोनों पिताओं से पुन: मिलन तो कल्प के 5000 वर्ष के बाद ही होगा। ऐसे पिता को देखते ही रहने और उनके संग में रहने का मन भला किसका न होता होगा? ऐसे बागवान व माली के हाथों पालना लेने की इच्छा किसकी न होगी और ऐसे विश्व सेवक के साथ विश्व-परिवर्तन के सर्वश्रेष्ठ कार्य में उनका सहयोगी बनने का मन किसका न होगा? 600 करोड़ मनुष्यात्माओं में से वही आत्माएं धन्य हैं जिन्होंने बाबा के साकार माध्यम द्वारा कल्प के बाद पुन: अवतरित हुए अपने पारलौकिक पिता परमात्मा शिव को जाना, पहचाना और उनके साथ संबंध जोड़कर अपना ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त किया।

ब्रह्माकुमार भाइयों के साथ ब्रह्मा बाबा। साथ में हैं ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई।

ब्रह्मा बाबा के तन में विराजमान परमात्मा के पास जाने, समीप बैठने से ही, पवित्रता से भरपूर अलौकिक वातावरण एवं नैनों से उनकी रूहानी किरणें हमें निहाल कर देती थी। बाबा ने हम बच्चों के रहने के लिए पांडव भवन में नए-नए मकान बनवाए थे, परंतु स्वयं पुराने मकान में ही रहते थे। बाबा किसी को भी चरण स्पर्श नहीं करने देते थे और कहते थे कि शिवबाबा के तो चरण हैं ही नहीं और फिर आप ही बच्चे तो स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं। अतएव भगवान स्वयं आपको नमस्ते करते हैं। मैं तो सिर्फ ब्रह्माण्ड का मालिक हूं। हम चैतन्य फूलों को सदैव मुस्कराते हुए रखने के लिए बाबा क्लास में एवं पत्रों के द्वारा जैसे संबोधित करते थे वैसे दुनिया में कोई भी माता-पिता नहीं कर सकता है।

ब्रह्मा बाबा आज हमारे बीच में नहीं है, लेकिन उनके द्वारा विश्व शांति के लिए बोए गए बीज आज पूरी दुनिया में फैल चुके है। जो भी ईश्वरीय पथ का राही बनता है उसको बाबा की सूक्ष्म प्रेरणा विश्व शांति के लिए प्रेरित करती है। आज भी ऐसा महसूस होता है कि विश्व शांति के लिए प्रयास उनके निर्देशन में चल रहा है। ऐसा नहीं है कि यह सिर्फ दूसरे तक सीमित है बल्कि स्वयं के बदलाव के साथ विश्व शांति का प्रयास इस मिशन का हिस्सा है।

बाबा ने प्रिंस से बढ़कर की पालना

जिस समय मैं ब्रह्मा बाबा के सम्पर्क में आयी उस समय मैं मात्र नौ साल की थी। बाबा ने प्रिंस-प्रिंसेस की तरह हमारी पालना ही नहीं की बल्कि हमें शिक्षा भी देते थे कि बच्चे तुम ही ब्रह्मा बनते हो, विष्णु बनते हो और फिर शंकर भी बनते हो। सुबह उठती हो, सृष्टि रचती हो तो ब्रह्मा बन गयी, दिन में पालना करती हो तो विष्णु बन गयी, फिर रात को तुम शंकर बनकर सारे दिन की दिनचर्या को खत्म कर दो। सदा यह स्मृति में रखो कि साकार में पार्ट बजाने वाली मैं निराकार आत्मा हूं तब ही निराकारी स्थिति में रह सकेंगे। जब आप इस स्थिति में रहेंगे तो आपके आस-पास का वातावरण गहन शांति से भर जाएगा और इसके प्रकम्पन दूर-दूर तक फैलेंगे और लोग शांति की अनुभूति करेंगे।

दादी हृदयमोहिनी, सह-मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू, राजस्थान

मां-बाप की तरह बैठते भगवान के साथ

हम तो बाबा के साथ ऐसे बैठते थे जैसे छोटे बच्चे मां-बाप के साथ बैठते हैं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं कि हम भगवान के साथ चलते हैं, बैठते हैं, बातें करते हैं। हमने बाबा को कभी भी साधारण रूप में नहीं देखा। साकार बाबा का हर बोल हम भगवान का महावाक्य समझकर ही स्वीकार करते थे। बाबा की चलन से हमें भगवान के चरित्र का अनुभव होता था। हर समय हमारा ध्यान बाबा के चेहरे, दृष्टि और बोल पर होता था। हमारे अंदर यह पक्का बैठ गया था कि बाबा, बाबा तो है ही साथ में इस बाबा में भगवान भी बैठा है।

दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

बाबा में अद्भुत परख शक्ति थी

ब्रह्मा बाबा से मेरी पहली मुलाकात सन् 1959 के जून मास में हुई थी। उस समय मेरी उम्र 19 वर्ष थी। जब बाबा की दृष्टि मुझ पर पड़ी तो ऐसा लगा कि शरीर में शक्तिशाली करेंट का प्रवाह बह रहा हो और जैसे कोई मेरे कानों में कह रहा हो, मीठे बच्चे, आराम से पहुंच गए? आओ बच्चे। ऐसे लगा जैसे कि अनेक जन्मों की प्रभु-मिलन की प्यास तृप्त हो रही हो। बाबा बहुत ही दृढ़ एवं निर्भय थे। उनका स्वभाव मधुर एवं सरल था, ऊंची हस्ती परंतु निर्मानता, अद्भुत परख शक्ति एवं निर्णय शक्ति थी।

ब्रह्माकुमार अमीरचंद, जोनल इंचार्ज, चण्डीगढ़ जोन

दादा लेखराज की अद्भुत जीवन कहनी | **विश्व इतिहास की महत्वपूर्ण घटना**

साक्षात्कार ने बदली जीवन की दिशा

सन् 1937 की बात है उन दिनों दादा के गुरु भी आए हुए थे। दादा ने उनके आगमन पर एक बहुत बड़ी सभा का आयोजन किया था। जिसमें उस समय उन्होंने 25000 रुपए खर्च किए थे। उसमें शहर के काफी प्रतिष्ठित लोग आए हुए थे। गुरु का प्रवचन चल रहा था तभी अचानक दादा वहां से उठकर अपने कमरे में चले गए। उनका अचानक इस तरह से उठ कर जाना उनकी पत्नी को अच्छा नहीं लगा और वो उनके पीछे कमरे तक गई। उन्होंने देखा कि दादा बहुत ही ध्यान मग्न मुद्रा में बैठे हुए हैं और उनकी आंखों में ऐसी लाली थी जैसे कोई लालबत्ती जल रही हो। उनका चेहरा भी लाल था और कमरा दिव्य प्रकाश से प्रकाशमय हो गया था। तभी एक आवाज आई जैसे दादा के मुख से कोई बोल रहा हो। वह आवाज धीरे-धीरे तेज होती गई। वह आवाज थी-

निजानन्द स्वरूपं, शिवोहम् शिवोहम्
ज्ञान स्वरूपं शिवोहम् शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपं, शिवोहम्, शिवोहम्।

फिर दादा के नयन बंद हो गए। जब उनके नयन खुले तो वे ऊपर-नीचे कमरे में चारों ओर आश्चर्य से देखने लगे। उन्होंने जो कुछ देखा था वे उसकी स्मृति में लवलीन थे। पूछने पर उन्होंने बताया कि एक लाइट थी और नई दुनिया थी। बहुत ही दूर, ऊपर सितारों की तरह कोई था और

जब वह स्टार नीचे आते थे तो कोई राजकुमार बन जाता था तो कोई राजकुमारी बन जाती थी। उस लाइट ने कहा ऐसी दुनिया तुम्हें बनानी है, लेकिन बताया नहीं कि कैसे बनानी है।

परमपिता परमात्मा शिव की प्रवेशता

अब दादा बहुत गहन विचार में लीन रहने लगे। वह कौनसी शक्ति है जो मुझे ऐसे ज्ञान-युक्त दिव्य साक्षात्कार कराती है और इनके पीछे रहस्य क्या है। दादा के परिजन भी इसी सोच में रहते थे कि पता नहीं दादा को क्या हो गया। अब दादा ध्यान मग्न और अन्तर्मुखी अवस्था में रहने लगे। आगे चलकर दादा को यह रहस्य स्पष्ट हुआ कि परमपिता परमात्मा शिव ने ही उनके तन में प्रवेश कर अपना परिचय दिया था। परमात्मा ने दादा को कलियुगी सृष्टि के महाविनाश तथा आने वाली सतयुगी सृष्टि का भी साक्षात्कार कराया और उस पावन सृष्टि की स्थापना के लिए उन्हें निमित्त अथवा माध्यम बनने का निर्देश दिया।

दादा को परमात्मा ने कराए दिव्य साक्षात्कार

विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार

दादा एकांत में बैठ हुए थे तभी उन्हें विष्णु के चतुर्भुज रूप का साक्षात्कार हुआ। उनके सामने विष्णु प्रगट हुए और कहा कि - अहम् चतुर्भुज तत् त्वम् अर्थात् मैं जो हूं वह आप ही है। इसके बाद फिर श्री कृष्ण, जगन्नाथ जी, बद्रीनाथ जी और केदारनाथ जी बारी-बारी से आए और उन सभी ने भी ऐसे ही कहा। इन साक्षात्कारों से जहां दादा को बहुत हर्ष हुआ वहीं अब दादा के मन में विचार चलने लगा कि मुझे तत् त्वम् का जो वरदान दिया गया है, उसका वास्तव में क्या भाव है। ये साक्षात्कार मुझे किसने कराए। इसके बाद अन्य साक्षात्कारों में परमात्मा ने दादा को उनके 84 जन्मों की जीवन कहानी बताकर यह स्पष्ट कर दिया कि आने वाली सतयुगी दुनिया में आप ही श्रीकृष्ण थे और फिर बनेंगे।

परमात्मा ने दिया दिव्य चक्षु का वरदान

एक दिन दादा मुम्बई में अपने घर में हो रहे सत्संग में बैठे थे, तभी वे सत्संग से उठकर अपने कमरे में चले गए। कमरे में जाते ही उन्हें विष्णु चतुर्भुज का दिव्य साक्षात्कार हुआ। दादा ने सोचा कि गुरु ने ही ये साक्षात्कार करवाए होंगे। इसलिए उन्होंने अपने गुरु को यह वृत्तांत सुनाया। परंतु गुरु के हाव-भाव से उन्होंने समझा कि गुरु इन बातों से बिल्कुल ही अपरिचित हैं। अत: उनका मन अब परमपिता परमात्मा की ओर मुड़ा जो ही वास्तव में सबका सद्गुरु है। दादा के मन में यह निश्चय हो गया कि दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि का दाता केवल परमात्मा ही है और उस एक ही को सच्चा गुरु मानना चाहिए। उन्हें महसूस हुआ कि परमपिता परमात्मा ने ही उन्हें दिव्य-चक्षु रूप का वरदान दिया है।

मृत्यु दशा का साक्षात्कार

दादा एकांत में बैठे मनन-चिंतन कर रहे थे तो उन्हें काका मूलचंद की मृत्यु-दशा का साक्षात्कार हुआ। उन्हें यह स्पष्ट दिखाई दिया कि आत्मा मस्तक से अलग होती गई। सत्ता छोड़ते-छोड़ते वह पांव के अंगूठे तक आई। फिर थर्मामीटर के पारे की तरह धीरे-धीरे ऊपर चढ़ते-चढ़ते मस्तक तक आई। फिर शरीर से अलग हो गई। इस प्रकार उन्हें मृत्यु की दशा का साक्षात्कार हुआ।

गृहयुद्धों और प्राकृतिक आपदाओं का साक्षात्कार

दादा को एक दिन साक्षात्कार हुआ कि सृष्टि में महाविनाश होने के परिणामस्वरूप करोड़ों आत्माएं परमधाम को वैसे ही लौट रही है जैसे पतंगे प्रकाश की ओर लपकते हैं। दादा ने दिव्य दृष्टि द्वारा भारत में विकराल गृहयुद्धों का और प्राकृतिक प्रकोपों का भी साक्षात्कार किया। विनाश के ये डरावने दृश्य देखकर दादा कांपने लगे। दादा ने देखा एक बहुत बड़ी बाढ़ आई है। जीव-प्राणी भयभीत होकर जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे है, परंतु वे बच नहीं पा रहे हैं। कहीं पर अग्नि अपना महाविकराल रूप धारण करके नगरों और जीव-प्राणियों को भस्मसात करती जा रही है। कहीं धमाके से मूसलाधार बारिश, तो कहीं पृथ्वी कम्पायमान होकर फट रही है। और सब जगह लोग हाहाकार कर रहे है और प्राणों की रक्षा के लिए भाग रहे हैं, परंतु लोग पारस्परिक युद्धों तथा प्राकृतिक प्रकोपों से बच नहीं पा रहे। साक्षात्कार में यह सब दृश्य देख दादा के नयनों से अश्रुधारा बहने लगी और दादा के मुख से शब्द निकले कि प्रभु! बस कीजिए, बस कीजिए, प्रभु! इतना भयंकर विनाश। अब मुझसे नहीं देखा जा सकता।

...और व्यापार से उठ गया मन

भविष्य में होने वाले महाविनाश को देखकर दादा का मन अब अपने व्यवसाय से उठ चुका था। अत: उसे समेटने के लिए वे वहां से कलकत्ता गए। उन्हें अब हीरे पत्थर की तरह दिखाई देने लगे और व्यापार झूठा लगने लगा। उन्होंने अपने भागीदार से कहा-अब हमें छुट्टी दो। उन्होंने सोचा कि पता नहीं वे कितना हिस्सा मांगेंगे परंतु दादा ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा कि मैं किसी मतभेद के कारण नहीं जा रहा हूं बल्कि इसलिए जाना चाहता हूं कि मुझे अब यह धन्धा झूठा लगने लगा है। मुझे ईश्वरीय प्रेरणा आई है कि निकट भविष्य में कलियुगी सृष्टि का महाविनाश होना है। अत: मुझे अब यह धन ईश्वरीय सेवा में लगाना है। मैं अभी बैठकर आपसे कोई हिसाब-किताब नहीं करूंगा। आप बाद में अपने वकील द्वारा, जैसे भी ठीक समझो, हिसाब करा देना। वकील द्वारा हिसाब का फैसला करने से संबंधित जो कागज मिले, उन्हीं कागजों और उसी हिसाब-किताब को उन्होंने ठीक मान लिया।

तब उन्होंने अपने घर में तार दिया जिसमें लिखा था- **अल्लिफ को अल्लाह मिला, बे को मिली झूठी बादशाही। आई तार अल्लिफ को, हुआ रेल का राही।**

घर से की सत्संग की शुरूआत

जब दादा सिंध में आए तो उनका जीवन बिल्कुल ही बदला हुआ था। अब दादा ने कई दिनों से बाहर घूमने जाना भी बंद कर दिया था। दादा ने सबसे पहले घर से ही सत्संग की शुरूआत की। घर के सभी सदस्य आंगन में बैठते और दादा आत्मा का ज्ञान देते। थोड़े ही दिनों में दादा के दूर के संबंधी भी आने लगे। अब दादा को गीता में और अधिक श्रद्धा हो गई थी, इसलिए वे गीता-ज्ञान सुनाया करते थे। गीता का ज्ञान सुनाते-सुनाते लोगों को साक्षात्कार होने लगे। किसी को श्रीकृष्ण का, किसी को कलियुगी सृष्टि के महाविनाश का, तो किसी को सतयुगी दैवी दुनिया का दिव्य साक्षात्कार होने लगा। इस बात की चर्चा सारे शहर में फैल गई कि दादा के पास जाकर सत्संग करने से साक्षात्कार होते हैं। अब बड़ी संख्या में लोग आने लगे। लोग मानते थे कि दादा ही साक्षात्कार कराते हैं। दादा को बाद में यह ज्ञान हुआ था कि उन्हें और उन द्वारा दूसरों को साक्षात्कार कराने वाला स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ही हैं।

बाबा किसी भी परिस्थिति में नहीं हिले

अमृतवेले दो बजे जागकर बाबा योग साधना किया करते थे। चलते-फिरते ब्रह्मा बाबा खुद याद में रहते और जो भी मिलता उसको भी शिव बाबा की याद दिलाते थे। शिव बाबा के सिद्धांतों पर उनका अचल, अटल और अविनाशी निश्चय था। वे किसी भी परिस्थिति में हिले नहीं। उन्होंने माताओं और कन्याओं को सम्मान देकर उनको ऊंचा उठाया और दुनिया के सामने दर्पण बनाया, सेम्पल बनाया।

बीके कमलेश बहन, सबजोन प्रभारी, कटक, उड़ीसा

घर बैठे होते बाबा के साक्षात्कार

बाबा से पहली मुलाकात में ऐसा लगा जैसे साक्षात् भगवान मिल गए और बाबा का अवतरण मेरे लिए ही हुआ है। उस दिन मेरी तलाश पूरी हो गई। बाबा से मिलने पर कई बार अलग-अलग साक्षात्कार होते। मुझे घर बैठे बाबा का साक्षात्कार होता था। बाबा हमेशा कहते तुम शेरनी शक्ति हो, आदि रत्न हो। बाबा मुझे बहुत प्यार करते थे और जब मैं पहली बार मधुबन गई तो बाबा मुझे गेट पर ही मिले और बोले आओ बच्ची बाबा के घर में तुम्हारा स्वागत है।

ब्रह्माकुमारी सत्या बहन, सबजोन प्रभारी, ट्रांस जमुना, आगरा, उप्र

विश्व शांति के लिए आत्मा का ज्ञान जरूरी

बाबा कहते थे कि विश्व-शांति के लिए सबसे पहले लोगों को आत्मा का ज्ञान होना जरूरी है। तभी विश्व में शांति आएगी। मैंने जीवन में भगवान को पाने के लिए बहुत दु:ख उठाया, लेकिन भगवान मुझे नहीं मिला। जब मैंने ब्रह्मा बाबा को पहली बार देखा तो मुझे अंदर से यह अनुभूति हुई कि इनके तन में ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा विराजमान है।

ब्रह्माकुमार शंकर प्रसाद भाई, प्रसिद्ध आर्टिस्ट, मऊ, यूपी

विश्व की आत्माओं को देते थे शांति का दान

बाबा सुबह जल्द उठ जाते थे और विश्व की समस्त आत्माओं को इमर्ज करके उन्हें शांति का योगदान देते थे और उनके सुख-शांति की कामना करते थे। बाबा कहते थे जीवन में पवित्रता को अपना लो तो स्वत: ही आप शांति से जीना सीख जाएंगे। यह दुनिया जल्द ही समाप्त होने वाली है और सुख-शांति से संपन्न एक नई दुनिया आने वाली है।

मदनलाल शर्मा, सुप्रसिद्ध उद्योगपति, जयपुर

पाठक पीठ

धर्म में जागी आस्था

शिव आमंत्रण पढ़कर पहली बार मुझे धर्म में आस्था जागी है। इसके लिए मैं भगवान को व संस्था को धन्यवाद देता हूं।

प्रकाश ब्रह्मभट्ट, किम्स हॉस्पिटल, अहमदाबाद

सच्चा ज्ञान दिया

आज तक तो मैं देवताओं को ही भगवान मानता आ रहा था, लेकिन शिव आमंत्रण ने हमारी आंखें खोल दी और हमें सच्चा ज्ञान दिया।

सुधांशु कुमार, पानीपत

हम सब आत्माएं

मैं कण-कण में भगवान को मानती थी, लेकिन शिव आमंत्रण न्यूज पेपर पढ़ने से मुझे सच्चा ज्ञान मिला कि परमात्मा तो परमधाम के निवासी है और हम सब आत्माएं है।

प्रियंका कुमारी, पानीपत

इस शिक्षा की आवश्यकता

परिवर्तन का आधार मूल्यनिष्ठ शिक्षा लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक लगा। वर्तमान पीढ़ी को आज इसी शिक्षा की आवश्यकता है।

जया बहन, दिल्ली

इस खेती की जरूरत

'नए युग के लिए नई खेती' अंक पढ़ा। इसके बाद मुझे मालूम हुआ कि हमारी भावनाओं का पेड़-पौधों और हमारे आसपास के वातावरण पर भी प्रभाव पड़ता है। वर्तमान समय में इस खेती की जरूरत है।

दिनेश कुमार, राजस्थान

नई प्रेरणा मिली

यौगिक खेती का अंक पढ़कर मुझे नई पद्धति से खेती करने की एक नई प्रेरणा मिली। इस अंक ने मेरी आंखें खोल दी।

उमेश कुमार, हरियाणा

प्रतिक्रिया एवं सुझाव

यह अंक आपको कैसा लगा, कृपया आप अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव निम्न पते पर भेंजे।

पता: ब्रह्माकुमारीज़, मीडिया विंग एण्ड पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबूरोड जिला-सिरोही, राजस्थान, पिन कोड: 307501 (फोन: 02974-228230)

Email- shivamantran.media@gmail.com

बाबा ने वतन में सिखाया पढ़ना-लिखना

मुझे लिखना-पढ़ना आता नहीं था। तब बाबा ने कहा कि बाबा तुम्हें लिखना-पढ़ना सिखाएगा। डायरी और कलम लेकर मैं बाबा को याद करने लगी। तो थोड़े ही समय में बाबा ने मुझे वतन में खींच लिया। तब बाबा ने कहा कि बच्ची रोज तुमको पढ़ाने के लिए बाबा मधुबन से आएगा। फिर बाबा ने मुझे पढ़ाना शुरू किया। पंद्रह दिन में मैंने हिन्दी पढ़ना और लिखना सीख लिया। बाबा ने कहा था, बच्ची, जितनी लगन से मेहनत करेगी उतना आगे जा सकती है। फिर मैंने धीरे-धीरे मुरली पढ़ना भी सीख लिया।

बीके कैलाश बहन, सबजोन प्रभारी, गांधीनगर, गुजरात

और बाबा ने मीठा बना दिया

ब्रह्मा बाबा से पहली बार मैं दिल्ली में मिली थी। उस मुलाकात में मन को अद्भुत शांति की अनुभूति हुई और वह पल मेरे लिए जीवन का यादगार पल बन गया। बाबा मुझे हमेशा मीठी बच्ची कहते थे। बाबा जब दृष्टि देते थे, तो ऐसे लगता था कि जैसे दूर-दूर कुछ आत्माओं के जन्मों को परख रहे हैं।

बीके विजया बहन, सबजोन प्रभारी जींद, हरियाणा

...और कोई कमी नहीं हुई

मस्तक को देखकर बाबा जो कुछ भी कहते थे वह वरदान बन जाता था। मेरे मस्तक को देखकर बाबा ने बोला कि बच्ची को जल्दी अनुभवी बनाऊंगा और ऐसे महसूस हुआ कि बाबा मुझे कह रहे हैं कि बच्ची तेरे जीवन में तन-मन-धन की कभी कमी नहीं रहेगी, सर्व का सदा सहयोग मिलता रहेगा। सचमुच उस दिन से आज तक कभी भी कोई कमी महसूस नहीं हुई।

बीके पुष्पा बहन, सबजोन प्रभारी, कैथल, हरियाणा

बाबा के बोल वरदानी थे

बचपन से ही मुझे भगवान से मिलने की लगन थी। बाबा से मिलते ही मुझे लगा कि जिसकी मुझे तलाश थी वह आज पूरी हो गई। बाबा को हमने सदा लाइट के रूप में ही देखा और ऐसा अनुभव होता था कि कोई फरिश्ता हमारे साथ चल रहा हो। बाबा का एक-एक महावाक्य वरदानी था।

बीके मीरा बहन, सबजोन प्रभारी, शांताक्रुज, मुम्बई

बाबा ने कहा ज्ञान बुलबुल

यह सन् 1967 की बात है। मैं दिल्ली से मधुबन आई थी। रात को हिस्ट्री हॉल में अनुभव सुनाने लगी तो मुझे खड़ाऊं की आवाज सुनाई पड़ी। मैंने समझा कि बाबा आ गए, तो मैं चुप हो गई। बाबा आए नहीं तो मैंने समझा यह मेरा भ्रम होगा। फिर सुनाना शुरू किया। थोड़े समय के बाद बाबा अंदर आए और कहने लगे कि ज्ञान-बुलबुल क्या गीत गा रही थी? बाबा के ये महावाक्य मेरे लिए वरदान बन गए। बाबा के इन महावाक्यों ने मुझे यह प्रेरणा दी कि ज्ञान को गीत की तरह ही गाना है। तब से मुझे जो प्वाइंट्स अच्छी लगती थी उनको पहले अंदर में गुनगुनाती थी और बाद में गीत की तरह सुनाती थी। बाबा के इस वरदान से मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं ज्ञान को गुनगुना रही हूं और गीत के रूप में दूसरों को सुना रही हूं।

बीके सुदेश बहन, जर्मनी में सेवाकेंद्रों की मुख्य निदेशिका

बाबा के बोल हो गए साकार

बाबा के अंदर ज्ञान से पालना करने की अद्भुत शक्ति थी। मैंने सच्चे मां-बाप का प्यार बाबा से पाया। मेरे लिए आश्चर्य की बात यह थी कि मेरे मन में जो विचार चलते थे वे बाबा को पहले से ही मालूम हो जाते थे। जब मेरी माताजी ने बाबा से कहा कि बाबा यह शादी के लिए मना कर रही है। तो बाबा ने कहा कि माता, तुम अब तक भक्ति में भगवान को पतित पावन आओ, कहकर पुकारती थी और आज जब तुम्हारी बेटी पावन बनना चाहती है तो उसको क्यों पतित बनाना चाहती हो? तुम्हारी यह बेटी पावन रहकर विश्व की सेवा करेगी। उस समय बाबा के मुख से ये वरदान भरे बोल निकले जो बाद में साकार हो गए।

बीके वेदान्ती बहन, नैरोबी में सेवाकेंद्रों की निदेशिका

प्रभु मिलन का स्वर्णिम अवसर आया

मेरे जीवन में प्रभु-मिलन का वह स्वर्णिम अवसर आया जिसकी वर्षों से मेरे अंदर तीव्र इच्छा थी। जब मैंने बाबा की दिव्य छवि को देखा तो उनकी शीतल और शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे आत्म-विभोर कर दिया। बाबा ने मुझे वरदान देते हुए कहा कि बच्ची बहुत नष्टोमोहा है, बहुत योगयुक्त है। बच्ची ने जल्दी ही अपने कर्म बंधनों को काटा है- ऐसा कहते हुए बाबा ने दिल से मेरी बहुत प्रशंसा की और मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया।

बीके राज बहन, नेपाल, काठमाण्डु में सेवाकेंद्रों की निदेशिका

यह तो मेरा सच्चा पिता है

जब मैं पहली बार बाबा से मिली तो बाबा ने शक्तिशाली प्रेमभरी दृष्टि दी और वरदानों से हमारी झोली भर दी। भले ही मुझे यह पता नहीं था कि भगवान ही ब्रह्मा बाबा द्वारा हमें मिल रहा है, लेकिन बाबा के भाव और भावना से हमें महसूस होता था कि हमने बहुत समय से खोए हुए अपने पिता को पाया है। सात दिन तक हम बाबा के साथ ही रहे। मधुबन देखकर मुझे यही अनुभव हुआ कि मैं यहां पहली बार नहीं बल्कि अनेक बार आई हूं।

बीके मीरा बहन, मलेशिया में सेवाकेंद्रों की निदेशिका

हरेक की आत्मा की ज्योति जगाओ

विश्व शांति के लिए बाबा ने कहा था कि हर एक व्यक्ति के आत्मा की ज्योति जगाओ, उन्हें सच्चा ज्ञान दो और ओम शांति के स्वरूप की अनुभूति कराओ। इससे सहज ही व्यक्ति शांति में रहना सीख जाएगा तो विश्व में स्वत: ही शांति आ जाएगी। मैं ब्रह्मा बाबा से मुम्बई में ही मिली थी। जब मैं पहली बार बाबा से मिली तो मुझे बाबा में श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ और उसके बाद ज्योति स्वरूप परमात्मा दिखाई देने लगा। फिर मुझे यह अनुभूति हुई कि जैसे भगवान ही मुझे उनसे मिलवा रहा हो और मैंने उसी दिन से ब्रह्मा के सही स्वरूप को पहचाना था।

बीके गोदावरी बहन, सबजोन प्रभारी मुलुंद, मुंबई

इतिहास के झरोखे से — 1937 से अब तक का सफर

विश्व शांति के मार्ग में बाधाएं

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी इस दुनिया में कोई धर्मप्रवर्तक, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाला, धर्म और पवित्रता के पथ पर चलने की शिक्षा देने वाले महापुरुष हुए है सभी को विरोध का सामना करना पड़ा है। सभी को डराया धमकाया गया, यातनाएं दी गई। फिर चाहे वह स्वामी दयानन्द हो, हजरत ईसा, हजरत इब्राहिम, महात्मा बुद्ध, हजरत मुहम्मद को विरोधियों और समस्याओं का सामना करना पड़ा।

ब्रह्मा बाबा के साथ मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती व दादियां।

माउण्ट आबू. ओम मंडली में आने वाली माताओं और कन्याओं को ब्रह्मचर्य के नियम का दृढ़ता से पालन करता देखकर लोगों में हलचल शुरू हो गई। लोग कहने लगे कि हमने ऐसा सत्संग कभी नहीं देखा। यदि माताएं ब्रह्मचर्य का पालन करने लगेगी तो इस सृष्टि की वृद्धि कैसे होगी? लोगों ने ओम मंडली का विरोध करने के लिए एक संगठन बनाया और अनेक तरह से ओम मंडली में आने वाली माताओं, बहनों, कुमारियों और भाइयों को डराना धमकाना और मारपीट करना शुरू कर दिया। उन्हें तरह-तरह से परेशान किया गया और अत्याचार किए गए। जादू-टोने, टोटके करवाए गए।

...और निरंतर आगे बढ़ती गई मंडली

इस प्रकार ओम मंडली अनेक प्रकार के विरोधों, विघ्नों और समस्याओं का सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ती रही। इस सत्संग में आने वालों की संख्या भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। इसकी प्रसिद्धि को देखकर कई लोगों ने ओम-मंडली के ऊपर मुकदमा दायर कर दिया और अपने परिवार के लोगों को वहां जाने से मना करने लगे। इतना सब होने पर भी बाबा सदा निश्चिंत, अडोल और साक्षी अवस्था में रहते थे। वे कहा करते थे कि हम तो परमपिता परमात्मा के सेवक हैं, वही सब ठीक कर देगा। धर्म के मार्ग पर ये परीक्षाएं तो आती ही है, परंतु हमें इस निश्चय में स्थित रहना चाहिए कि सच की बेड़ी डोलती है, डूबती नहीं है।

उनके इस शांत और निश्चिंत जीवन से प्रेरणा लेकर तथा सत्यता के आधार पर अडिग रहकर सभी माताएं-बहनें एवं भाई ईश्वरीय पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहे। उन्होंने परमात्मा का साथ और निश्चय होने के कारण सभी समस्याओं पर विजय पाई।

जो कि सच्चाई की राह पर चलने का प्रतीक था। तब लोगों में यह धारणा बन गई कि इस मंडली में जाने वाले लोगों को जादू लग जाता है।

300 भाई-बहन रहते थे स्नेह से

इन पांच बंगलों में लगभग 300 भाई-बहनें कई वर्षों तक इकट्ठे रहकर ईश्वरीय ज्ञान लेते रहे। अलग-अलग घरों, अलग-अलग संस्कारों और विचारों तथा अलग-अलग आयु वाले और आर्थिक दशा वाले इतने सारे व्यक्तियों का परस्पर स्नेह से रहना यह कोई कम बात नहीं है। जहां इस घोर कलियुग में एक घर में पांच-छ: बच्चे भी शांतिपूर्वक और स्नेह से इकट्ठे नहीं रह सकते हैं। परमपिता परमात्मा शिव जिन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा यह ज्ञान-यज्ञ रचा था, की ही कमाल थी कि इतने वर्षों तक सैकड़ों व्यक्ति यज्ञ-माता और यज्ञ-पिता से अलौकिक शिक्षाओं को धारण करते हुए परस्पर स्नेहपूर्वक इकट्ठे रह रहे थे। इकट्ठे पुरुषार्थ कर रहे थे और सभी अपने-अपने संस्कारों को शुद्ध करने का प्रयास कर रहे थे। एक बार कराची में शिव बाबा ने यज्ञ-वत्सों को लगातार 15 दिन तक केवल बाजरी का ढोढा और छाछ ही लेने का निर्देश दिया था। यहां तक कि जो बीमार थे, उन्हें भी कहा गया कि वे भी इसी भोजन पर रहे। यही भोजन उनके लिए औषधि का काम करेगा। बीमार कन्याओं-माताओं तथा भाईयों ने नि:संकल्प तथा सम्पूर्ण निश्चय से उस भोजन को यज्ञ-प्रसाद की भावना से ग्रहण किया। सभी को उसके परिणाम से बड़ा संतोष हुआ, क्योंकि उनका स्वास्थ्य दिनोंदिन अच्छा होता गया। इसके बाद सभी भाई-बहनों को यह दृढ़ निश्चय हो गया कि शिव बाबा की प्रत्येक आज्ञा पर चलने से कल्याण समाया हुआ है।

ओम मंडली का कराची में स्थानांतरण

इसके पश्चात् ओम मंडली कराची स्थानांतरित हो गई। वहां छावनी में शांत वातावरण में बाबा ने पांच अच्छे-अच्छे बंगले लिए। ये बंगले ओम् निवास, बेबी भवन, ब्वाइज भवन, प्रेम भवन और राधा भवन के नाम से जाने जाते थे। इस पुरुषोत्तम संगमयुग में धर्म के माता-पिता से सभी को जो निष्काम, शुद्ध और आत्मिक प्यार मिला उसका वर्णन करना असंभव है। उस सुख और स्नेह के आगे उन्हें स्वर्ग का सुख भी फीका लगता था। ऐसा सुख तो व्यक्ति को करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद भी मिलना मुश्किल है। इस पृथ्वी पर ईश्वर द्वारा पालना लेने का यही एक सुनहरा अवसर सारे कल्प में आत्माओं को मिलता है। जिन्होंने उसका अनुभव किया है, वे ही इसे जानते हैं। परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य प्रवेश करके माता-पिता के रूप में आत्माओं को ऐसा लाड़-प्यार दिया जिससे कभी किसी के मन में संकल्प ही नहीं उठता था।

लखीराज भवन को लगा दी आग

21 जून 1938 की बात है। जब लोगों ने देखा कि यह कन्याएं व माताएं मना करने के बाद भी ओम मंडली जाती है तो विरोधियों ने सोचा कि जिस भवन में ये लोग जाकर सत्संग करती है क्यों न उसे ही धूल-धूसरित कर दिया जाए? उस भवन को लखीराज भवन के नाम से जाना जाता था। एक दिन जब दादा सत्संग भवन में उपस्थित नहीं थे तो विरोधियों ने अवसर जानकर भवन पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने लखीराज भवन को चारों ओर से घेर लिया और उसके खिड़की-दरवाजे को तोड़ने लगे। जब इससे भी बात नहीं बनी तो लोगों ने इस भवन को ही आग लगा दी। क्रोध के वश हुए उनलोगों ने यह भी न सोचा कि हमारी ही कन्याएं-माताएं, बहू-बेटियां अंदर है, भवन को आग लगाने के से वे भी जीते-जी जल जाएगी।.

जाको राखे साइयां...

उसी समय किसी ने पुलिस और फायर बिग्रेड को फोन कर दिया। जिससे उपद्रवियों और आग पर काबू पाया जा सका। सच ही कहा गया है कि जाको राखे साइयां, मार न सके कोय, बाल न बांका कर सके चाहे सौ जग बैरी होय। लोगों ने हजार कोशिश की परंतु वे कुछ भी बिगाड़ न सके। लखी भवन को जलाने का वृत्तांत तो महाभारत से पहले भी कौरवों द्वारा लाखा भवन को आग लगाए जाने के वृत्तांत के रूप में वर्णित है।

नारी शक्ति ने तोड़ी कुरूतियों की जंजीरें

उन दिनों सिंध में यह रिवाज था कि किसी निकट संबंधी की मृत्यु हो जाने पर माताएं मिट्टी से सने हुए मैले कपड़े पहनती थी। वे विलाप करती थी और रोती रहती थी। परंतु बाबा का ज्ञान सुनने से उनके मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि लोक-लाज और आसुरी मर्यादा अथवा कुरीति के बंधनों को तोड़कर अब उन्होंने मैले-कुचैले कपड़े पहनना छोड़ दिया और वह आत्मिक सुख में रहने लगी। ओम मंडली में आने वाली अनेक माताओं के जीवन में इस प्रकार के कई सुधार हुए।

दादियों के साथ ब्रह्मा बाबा।

वहीं सिंध में बहुत से घरों की बहू-बेटियां पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण फैशन करती थी। कई तो जेवरों से लदी रहती थी और अन्य बहुत सी जिह्वा के स्वाद के वशीभूत थी। धनाढ्य लोगों के घर में नौकर खाना बनाते और सब कार्य करते थे, लेकिन ओम मंडली के संपर्क में आने पर कन्याओं-माताओं ने फैशन करना तथा स्वयं को स्वर्ण-आभूषणों से सजाना छोड़ दिया और वे घर का सब कामकाज भी अपने हाथों से करने लगी। उनके जीवन में सहज ही सादगी आ गई और खान-पान पर कंट्रोल हो गया क्योंकि ओम मंडली में उन्हें कर्मेन्द्रियों को वश में करने की शिक्षा मिलती थी। इस सत्संग में आने वाली माताओं का मन अब दहेज-प्रथा से तथा बनाव-शृंगार से उठ गया।

उनके जीवन में ये सुधार देखकर सिंध में लोगों के मन में ओम मंडली के लिए एक आदर की भावना थी, क्योंकि शताब्दियों से चली आई कुप्रथाओं और कुरूतियों से माताओं को मुक्त कर दिया। ओम मंडली की यह ख्याति सुनकर कुटुम्बी भी अपनी बहू-बेटियों और माताओं-कन्याओं को सत्संग में भेजने लगे।

बालिकाओं के भाषण से दंग रह जाते थे लोग

बाबा ने ज्ञान का कलश कन्याओं-माताओं के सिर पर रखा। जिससे उनमें एक अलौकिक शक्ति आने लगी। जो कल तक अपने जीवन से असंतुष्ट थी और बोलने में हिचकिचाती थी, आज वे नि:संकोच ज्ञान सुनाती थी। बारह-चौदह वर्ष की छोटी-छोटी कुमारियां भी विकारों को जीतने अथवा मन को तथा इन्द्रियों को वश करने के विषय पर ऐसा ज्ञानयुक्त भाषण करती जो सुनने वाले दंग रह जाते।

लौकिक संबंधियों पर भी ज्ञान का रंग

जैसे और लोग ईश्वरीय ज्ञान से लाभान्वित हो रहे थे, वैसे ही दादा अपने परिवार के संबंधियों को भी ज्ञान के रंग में रंगने के लिए प्रयत्नशील थे, क्योंकि दादा को इस उक्ति पर दृढ़ विश्वास था कि खैरात घर से शुरू होनी चाहिए। दादा की धर्म-पत्नी और बहू तो पहले से ही धर्म-परायण और भक्ति भाव से भरपूर थी और अब वे दोनों ईश्वरीय ज्ञान का पुरुषार्थ कर रही थी। इसलिए अब दादा का ध्यान विशेष तौर पर अपनी बड़ी पुत्री की ओर गया जिनका विवाह दादा ने अज्ञानकाल में करा दिया था। उन्हें इस बात का दु:ख था कि मैं ही उसके पतन के निमित्त बना, इसलिए अब मेरा ही कर्त्तव्य है कि मैं उसे पवित्रता के मार्ग पर लाऊं। आखिर दादा का यह शुभ संकल्प पूरा हुआ।

दादा की अनुपस्थिति में सत्संग की स्थापना

इस प्रकार कईयों के जीवन में परिवर्तन लाने के बाद दादा एकांत के लिए कश्मीर चले गए। यह बात सन् 1936 की है। जब बाबा कश्मीर में थे तो उनके कुछ मित्र-संबंधी तथा अन्य माताएं-कन्याएं, जिनमें आत्म-जागृति आई थी, बाबा के उसी पुराने मकान में आते रहे और आपस में ज्ञान-वार्तालाप भी करते रहे। वे बाबा के साथ पत्र-व्यवहार भी करते थे। बाबा कश्मीर से पत्रों के रूप में ज्ञान का अमूल्य खजाना भेजते रहते थे। उसमें लिखित शिक्षाओं को लोग अपने जीवन में अपनाने का भरसक प्रयत्न करते थे। उन सभी को अपने जीवन में गोपियों जैसा सुख प्राप्त होता था। कभी ज्ञान की मुरली की याद, कभी प्रेम के आंसू, इस प्रकार भिन्न-भिन्न प्रकार से निराले अनुभव होने लगे। ज्ञान पाकर लोगों को अनुभव होता था कि जैसा उनका नया जीवन शुरू हुआ है।

... और घर-घर में पहुंच गई आवाज

ईश्वरीय ज्ञान से लोग इतने प्रभावित हो गए थे कि उनके द्वारा घर-घर में इस सत्संग की महिमा की आवाज पहुंच गई थी। शहर के लोगों ने देखा कि इस सत्संग में जो कोई भी जाता है, उसके जीवन में विशेष परिवर्तन आ जाता है। वह अशुद्ध खान-पान छोड़ देता है और उसकी अन्य बुराइयां भी मिट जाती है। जो माताएं घर में पहले झगड़ा करती थी, अब वे शांतिपूर्ण व्यवहार करती थी। लोगों ने यह भी सुना था कि यहां साक्षात्कार भी सहज ही होता है। इसलिए लोग इस सत्संग की ओर आकर्षित होने लगे। दिनोंदिन सत्संग में आने वाले लोगों की संख्या बढ़ने लगी। दादा जो पत्र भेजते थे उसमें समाए हुए ज्ञान को बुद्धि में धारण करके, आत्मा के स्वरूप में टिक कर, माताएं-कन्याएं उस ज्ञान के आधार पर इतना सुंदर भाषण किया करती थी कि सुनने वाले लोग चकित हो उठते कि उसमें ज्ञान की ऐसी ऊंची बातें बोलने की इतनी शक्ति कहां से आ गई।

बाबा का हर एक कर्म आदर्श था

जब मैं पहली बार मधुबन आई मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यहां की हर चीज और हर व्यक्ति से पहले से ही परिचित हूं। श्वेत वस्त्रधारी बहनों एवं भाइयों के तपस्वी चेहरों ने मधुर मुस्कान से मेरा स्वागत किया। जब मैंने बाबा को देखा तो अपलक देखती ही रह गई। बाबा के चेहरे से ज्योति की आभा फूट रही थी, आंखों से वात्सल्य, प्रेम, शक्ति, दया सब कुछ एक साथ छलक रहा था। बाबा का हरेक कर्म हम बच्चों के लिए आदर्श था।

बीके मोहिनी बहन, अध्यक्षा, ग्राम विकास प्रभाग

बाबा ने कराया ज्योतिर्लिंग का साक्षात्कार

मैं बचपन से ही बहुत भक्ति करती थी और मुझे देवी-देवताओं के साक्षात्कार होते रहते थे। मैं शिव मंदिर में रोज पूजा करने के लिए जाती थी। एक दिन जब मैं पूजा कर रही थी तो मुझे शिवलिंग की जगह ज्योतिर्लिंग का साक्षात्कार हुआ। फिर मैंने देखा कि मंदिर के बाहर ब्रह्मा बाबा बैठे हुए हैं। उस समय मुझे ब्रह्माकुमारीज के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और न ही मैं ब्रह्मा बाबा को जानती थी। पूजा करने के बाद मैं भगवान से यही प्रार्थना करती थी कि मुझे देवी-देवता क्यों नहीं बनाया। एक दिन मेरी मां ब्रह्माकुमारीज के सेवाकेंद्र पर ले गई तो वहां मैंने ब्रह्मा बाबा का चित्र लगा हुआ देखा तो मैं आश्चर्यचकित रह गई कि ये तो वही बाबा हैं जिसका साक्षात्कार मुझे मंदिर के बाहर हुआ था। मैं ब्रह्मा बाबा से दृष्टि लेते-लेते मैं ध्यान में चली गई, तो वहां भी मुझे ब्रह्मा बाबा और ज्योतिर्लिंग दिखाई दिए और उन्होंने कहा कि मैं शिव हूं और मैं ब्रह्मा द्वारा सृष्टि स्थापन का कार्य कर रहा हूं।

बीके सुरेन्द्र बहन, सबजोन प्रभारी वाराणसी एवं पश्चिम नेपाल

बच्ची मैं भारत में आया हूं....

एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में सफेद प्रकाश की काया वाले व्यक्ति में लाल प्रकाश को प्रवेश करते देखा। कुछ ही क्षणों के बाद वह आकर्षक स्वरूप मेरे निकट आया और कहा कि बच्ची.. मैं भारत में आया हूं... तुम मुझे ढूंढ़ लो..। तभी से लेकर मैंने कई सत्संगों, धर्मगुरुओं, धर्म-उपदेशकों और धर्म-प्रचारकों के पास जाने लगी, लेकिन मुझे उस दिव्य पुरुष का दर्शन नहीं हुआ। कुछ मास के बाद हमारे नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र की ओर से साप्ताहिक कोर्स का आयोजन हुआ। उसमें मुझे छोड़कर परिवार के सभी लोग गए। मेरा अभी किसी में विश्वास नहीं रहा, न ही मुझे भगवान की प्राप्ति के लिए अब और कोई कोशिश करनी है। फिर भी मैं पिताजी के कहने पर उनके साथ गई तो मैंने चित्र में ब्रह्मा बाबा की तस्वीर देखी और सुना कि परमात्मा शिव इनके तन से गीता-ज्ञान दे रहे हैं। इस बात को सुनते ही मुझे वो दृश्य याद आ गया जो मैंने ब्रह्ममुहूर्त में देखा था और तभी मेरे दिल से आवाज निकली यही है.. यही है..यही है..जिस छवि को मैं इतने दिनों से तलाश रही थी।

बीके चंद्रिका बहन, राष्ट्रीय संयोजिका युवा प्रभाग, महादेव नगर, अहमदाबाद, गुजरात

जो पाना था सो पा लिया

पहली मुलाकात में ही बाबा के अलौकिक व्यक्तित्व की छाप मेरे मानस पटल पर अंकित हो गई। बाबा ने मुझे इतनी शक्तिशाली प्रेरणा दी कि मैं दो दिन में ही सिंधी लिखना सीख गई। पूर्व जीवन की हलचल के कारण जीवन बहुत दु:खी था, लेकिन बाबा को पाकर जीवन खुशियों से भर गया। मेरे जीवन में आए परिवर्तन को देखकर हमारे परिवार के सदस्य भी ब्रह्माकुमारीज में नियमित आने लगे।

बीके पुष्पा बहन, सबजोन प्रभारी, नागपुर, महाराष्ट्र

हर कार्य में स्वत: ही सफलता मिलती है

मुझे 1964 में कोटा हाउस में ही बाबा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय बाबा की जो स्नेह भरी दृष्टि मुझ पर पड़ी उसकी अनुभूति आज भी साकार रूप में होती रहती है। बाबा ने मुझे यह वरदान दिया था कि आप जब भी चाहो तब बाबा की याद से शक्ति ले सकती हो। आज इसी वरदान के कारण मुझे हर कार्य में सफलता स्वत: ही मिलती रहती है। लिखने और बोलने की शक्ति का वरदान बाबा का ही दिया हुआ है।

बीके रानी बहन, जोनल इंचार्ज पटना-मुजफ्फरपुर

बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है

बाबा से जब मैं 1961 में मधुबन में मिली तो बाबा ने मुझे देखते ही कहा, आ गई मेरी मीठी, प्यारी बच्ची। बाबा मुझे शेरनी बच्ची और फूल बच्ची कहकर पुकारते थे। जब भी कोई परिस्थिति आती है तो ऐसा लगता है कि बाबा का वरदानी हाथ सर पर है। मुरली क्लास पूरी होने के बाद जब बाबा उठते थे तो दरवाजे के बाहर जाने तक बाबा बच्चों को नमस्ते-नमस्ते कहते बच्चों की तरफ पीठ न करके ऐसे ही पीछे चलते थे और बाहर जाने के बाद मुड़कर जाते थे।

बीके सत्यवती बहन, सबजोन प्रभारी तिनसुकिया, आसाम

श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ

जब मैं पहली बार बाबा से मिली तो मुझे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ। साथ में रूहानी आकर्षण भी मुझे बहुत खींच रहा था। बाबा ने मुझे देखते ही अचल भव का वरदान दिया। बाबा ने मुझे कहा कि आप रूहानी टीचर बन बहुतों को भगवान का परिचय दोगी। मैं हर पल बाबा की समीपता का अनुभव करती रहती हूं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं कि मुझे स्वयं भाग्यविधाता भगवान से सम्मुख मिलन मनाने का अवसर मिला। बाबा का चलना,बोलना सब फरिश्तों की तरह था। बाबा के साथ ऐसा लगता था कि हम इस दुनिया से दूर फरिश्तों के वतन में है।

बीके अचल बहन, जोनल इंचार्ज, चंडीगढ़

स्नेह की मूरत थे बाबा

जब मैं बाबा से पहली बार मिली तो पहली दृष्टि में ही ऐसा लगा कि इनके शरीर में कोई दिव्य शक्ति विराजमान है जो मुझे अपनी ओर खींच रही है। बाबा के जीवन में सभी गुणों का समावेश था। वह स्नेह की मूरत थे। बाबा से मिलने पर लगता ही नहीं था कि हम स्वयं परमात्मा के साकार माध्यम से मिल रहे हैं। बाबा में रमणीकता का अद्भुत गुण था। बाबा का एक-एक कर्म प्रेरणादायी था। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे बाबा की साकार रूप में पालना मिली।

बीके आरती बहन, जोनल इंचार्ज, इंदौर जोन

वह झलक आज भी तरोताजा हो जाती है

पिताश्री से मेरी मुलाकात आज से करीब 51 वर्ष पहले हुई थी। उस समय मैं इस ईश्वरीय ज्ञान से परिचित नहीं था। हमने देखा कि पिताश्री सब बातों से उपराम रहकर निश्चिंत और नि:संकल्प रहते थे। मेरे जीवन में परिवर्तन का कारण भी पिताश्री थे। सन् 1961 में हम सब मधुबन आए थे। पिताश्री के साथ हमें 8-10 दिन रहने का मौका मिला। विदाई देते समय पिताश्री की आंखों में प्रेम के दो मोती चमकने लगे। वे अनमोल मोती देखकर मेरे मन में बिजली चमक उठी और मन में दृढ़ संकल्प हुआ कि देखो, पिताश्री का दिल कितना निर्मल और प्रेम सम्पन्न है। नि:स्वार्थ प्यार देने का महान कर्त्तव्य अलौकिक विभूति ही कर सकती है। जो कार्य हजारों शब्दों से नहीं हो सका, वह कार्य पिताश्री के नयनों की दो प्रेम की बूंदों ने किया। आज भी वह झलक बुद्धि में तरोताजा हो जाती है।

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

जैसा कर्म मैं करूंगी, मुझे देख और करेंगे

जब मैं दस वर्ष की थी तब बाबा से मेरी पहली मुलाकात 1960 में मधुबन में हुई थी। बाबा ने मुझे विश्व शांति पर समझाते हुए कहा कि जब तक मनुष्यात्माओं को आत्मा और सृष्टि चक्र का ज्ञान नहीं होगा तब तक शांति स्थापन नहीं हो सकती है। इसलिए विश्व में शांति स्थापन करने के लिए परमात्मा को इस धरा पर आना पड़ता है। बाबा ने कहा था कि सदा यह याद रखना कि जैसा कर्म मैं करूंगी, मुझे देख और करेंगे। आप अपने जैसे ही और लोगों को भी तैयार करना।

बीके आशा बहन, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़ ओआरसी, गुड़गांव

बच्चे सभी को सत्य ज्ञान मिलना चाहिए

मैं ब्रह्मा बाबा से सन् 1957 को मिला था। उस समय मैं इंजीनियरिंग का छात्र था। पढ़ाई समाप्त होने के बाद बाबा ने मुझे जगदीश भाई के पास साहित्य विभाग की सेवा के लिए भेजा। वहीं से मैंने बाबा की प्रेरणा से प्रदर्शनी के चित्र बनाने की सेवा शुरू की। बाबा कहते थे बच्चे सभी को सत्य ज्ञान मिलना चाहिए, जिससे सुख-शांति की राह मिल सके। कदम-कदम पर बाबा परमात्मा की याद दिलाते और सभी को अपने से आगे रख, आगे बढ़ाते। प्यार के सागर होते हुए भी वे पल में न्यारे होने की कला में भी निपुण थे।

बीके आत्मप्रकाश भाई, संपादक, ज्ञानामृत पत्रिका

परमात्मा सिर्फ इसी तन में आ सकता है

मैं तो मधुबन यह देखने आई थी कि निराकार परमात्मा ब्रह्मा के तन में आते हैं तो कैसे आते हैं। इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए मैं बाबा से मिलने आई थी। पहली ही नजर में मुझे यह विश्वास हो गया था कि परमात्मा शिव इसी तन में आ सकता है और कोई तन में नहीं। क्योंकि बाबा का व्यक्तित्व और फरिश्ता रूप ऐसा था जो मैंने कहीं नहीं देखा था। तभी मैंने यह फैसला लिया कि मुझे अपना जीवन ऐसा ही श्रेष्ठ और ऊंचा बनाना है।

बीके संतोष बहन, जोनल इंचार्ज, सायन, मुम्बई

...मैं ज्योति की दुनिया में पहुंच गई

मैं बाबा से मिलने के लिए मधुबन आई। मधुबन आते ही मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे मैं अपने घर वापिस आई हूं। जब मैं बाबा से मिलने गई तो जब बाबा दृष्टि दे रहे थे तो ऐसा अनुभव हुआ कि चुम्बक ने मुझ आत्मा को अपनी ओर खींच वतन में उड़ा दिया। मैं ज्योति की दुनिया में पहुंच गई। कुछ समय के बाद जब मुझे इस साकार दुनिया का आभास हुआ तो देखा कि बाबा बड़े प्यार से दृष्टि दे रहे थे। बाबा की दृष्टि देने का वह पल मेरे लिए यादगार बन गया। मेरे पूर्वजन्म के संचित कर्मों ने मुझे दो फरिश्ता रूप अभिभावक प्रदान किए। उनमें से एक हैं ब्रह्मा बाबा और दूसरी हैं दादी जानकी जी।

बीके जयंती बहन, यूरोप में सेवाकेंद्रों की मुख्य निदेशिका

अंदर-बाहर से एक थे बाबा

एक बार मैंने बाबा को पत्र लिखा कि मुझे आपकी बच्ची बनना है तो उसकी क्या-क्या शर्तें हैं? उत्तर में बाबा ने पत्र लिखा कि अगर रोज प्रात: क्लास में आओगी, ज्ञान सुनोगी तो आपका बाबा से सम्पर्क बनेगा। बाबा का व्यक्तित्व अंदर-बाहर से एकदम स्पष्ट और स्वच्छ था। ब्रह्मा बाबा सर्व गुणों के भंडार थे।

बीके मोहिनी बहन, अमेरिका एवं करेबियन देशों की निदेशिका

पहली मुलाकात में बदल गया जीवन का ध्येय

सन् 1954 की बात है। उस समय मैं इंजीनियरिंग का छात्र था। जब मैं बाबा से मिलने माउण्ट आबू गया तो पहली ही मुलाकात में ऐसा लगा जैसे कोई चुबंक अपनी ओर खींच रहा है। ऐसा अद्भुत व्यक्तित्व मैंने जीवन में पहली बार देखा था। उस मुलाकात के बाद मेरे जीवन का ध्येय ही बदल गया।

ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाई, जोनल इंचार्ज, इंदौर जोन

संकल्प हो जाते शांत

बीमारी के बाद शारीरिक रूप से मैं इतनी कमजोर हो गई थी कि अपना कार्य भी स्वयं नहीं कर पाती थी। तब प्यारे बाबा ने माता बन अपने हाथों से खिलाया, पिलाया और दृष्टि देकर इतना शक्तिशाली बना दिया कि कोई कभी सोच भी न सके कि यह शरीर इतना अस्वस्थ रहा होगा। शांति के सागर बाबा के सामने जाते ही सब संकल्प शांत हो जाते थे।

बीके प्रेमलता बहन, सबजोन प्रभारी, हरिद्वार

वाह मेरा बाबा

बाबा सच्चे पिता के समान व्यवहार करते थे। बाबा एक भव्य मूर्ति के साथ सौम्यमूर्ति भी थे। वे कहते थे, बच्चे, यही आपका असली घर है। जो कुछ बाबा का है सो आप बच्चों के लिए है।

बीके दयमन्ती बहन, सबजोन प्रभारी, जूनागढ़, गुजरात

बाबा हर बच्चे को याद की यात्रा की तरफ ध्यान खिंचवाते रहते थे। कहते थे कि याद में ही कमाई है और यही गुप्त मेहनत है। बाबा ने मधुबन एवं सेवाकेंद्रों की दिनचर्या ऐसी बनाई कि बच्चों में ज्ञान, योग, दैवी गुणों एवं सेवा की धारणा सहज ही हो जाए

बीके नलिनी बहन, सबजोन प्रभारी घाटकोपर, मुम्बई

माउण्ट आबू से बढ़ता गया शांतिदूतों का कारवां

विश्व शांति का शंखनाद

1959 में ओम-मंडली का पाकिस्तान से माउण्ट आबू स्थानांतरण हुआ और यहीं से ईश्वरीय सेवाओं का विश्व फलक पर शंखनाद शुरू हुआ। 14 वर्षों तक गहन तपस्या, योग-साधना के बाद अब ब्रह्मा वत्स विश्व के चारों कोनों में विश्व शांति का नारा लेकर निकल पड़े और यह ब्रह्मा वत्स लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने के निमित्त बने।

ब्रह्मा बाबा के समाधि स्थल 'प्रकाश स्तम्भ' पर विश्व-शांति के लिए सूक्ष्म प्रेरणाएं लेते हुए भाई-बहनें।

माउण्ट आबू. पूरे शहर में इस सत्संग के बारे में चर्चा होने लगी। इस तरह दिन- प्रदिदिन सत्संग में आने वाले भाईयों बहनों की संख्या में वृद्धि होती गई। सत्संग में ऊं की ध्वनि लगाने के कारण यह ओम मंडली के नाम से विख्यात हो गई।

बाबा ने ऊं राधे को इस सत्संग के लिए अवैतनिक संचालिक नियुक्त किया और उनके साथ आठ अन्य ज्ञाननिष्ठ माताओं और कन्याओं की अक्टूबर 1937 को एक कार्यकारिणी समिति बनाकर अपना समस्त धन और सम्पत्ति समिति के नाम कर दिया। अत: अब माताएं ही सारे कार्य को संभालने लगी।

परमात्मा शिव ने ओम बाबा के तन में प्रवेश करके सभी को निर्देश दिया कि वे अपने पिता, पति, अभिभावक से पत्र लेकर आए जिसमें लिखा हो कि वे अपनी पुत्री, बहू अथवा पुत्र को ओम राधे के पास जाकर ज्ञानामृत सुनने तथा अपने जीवन को पवित्र बनाने के लिए खुशी से छुट्टी देते हैं।

जिनके परिवार के सदस्य आते थे, उन्हें तो पत्र लाने में कोई कठिनाई नहीं हुई, लेकिन जिसके परिजन सत्संग में नहीं आते, उन्हें पत्र लाने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। लेकिन सभी ने अपनी उच्च धारणाओं, मनो परिवर्तन, सादा जीवन आदि के प्रभाव से ऐसा पत्र ले लिया।

आबू कोठी को बनाया बसेरा

सभी यज्ञ-वत्स आबू में बृज कोठी में आकर रहने लगे। जो कि श्मशान के निकट एकांत स्थान में थी। आबू शहर के बाहरी सिरे पर वन के पास होने के कारण यहां अक्सर सांप तथा अन्य वन्य पशु निकल आते थे। जिसका इन्होंने बहुत ही शांति और धैर्य से सामना किया। यहां यज्ञ-वत्सों को कभी किसी हिंसक पशु व जहरीले जीवों ने कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। यह परीक्षा यज्ञ-वत्सों को सम्पूर्ण और अधिकाधिक सहनशील बनाने के लिए आई थी। परंतु प्रकृति को अधीन करने की जो शिक्षा उन्हें मिली हुई थी, उस शिक्षा के बल से उन्होंने प्रतिकूल जलवायु से आई कठिनाई को भी पार किया।

छोटे बच्चों के लिए खोला बोर्डिंग

बाबा का विचार था कि यदि छोटे बच्चों को बचपन से ही आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए और सच्चे गुरूकुल की तरह वातावरण हो तो उनका बहुत ही कल्याण हो सकता है। अत: बाबा ने बालकों और बालिकाओं की शिक्षा के लिए भी एक बोर्डिंग खोल दिया गया। जहां सभी की दिनचर्या और शिक्षा ज्ञान-युक्त रीति से चलती थी।

तीन वर्ष पाकिस्तान में चली संस्था

अगस्त 1947 की बात है जब देश के बंटवारे की घोषणा हो गई तो बहुत से लोगों ने पाकिस्तान छोड़कर भारत आना शुरु कर दिया। परंतु देश के बंटवारे के बाद भी यह ईश्वरीय यज्ञ लगभग तीन वर्षों तक कराची में ही चलता रहा।

भारत आने की योजना

यज्ञ-वत्सों के संबंधियों को पाकिस्तान से भारत आए दो-तीन वर्ष हो गए थे। जब इन लोगों को मालूम हुआ कि ओम-मंडली अभी पाकिस्तान में है तो उन्होंने भारत आने के लिए अनेक बार आवेदन किया तथा निमंत्रण पत्र भेजें। फिर परमात्मा के आदेशानुसार ओम मंडली का भारत में स्थानांतरण किया गया।

कराची से विदाई

सन् 1950 में ओम-मंडली के ब्रह्मा-वत्स कराची छोड़कर भारत आने के लिए रवाना हुए। जब सिंध के मुसलमान लोगों को यह पता चला कि सभी ब्रह्मा-वत्स भाई-बहनें पाकिस्तान छोड़कर जा रहे हैं तो उन्होंने न जाने के लिए बहुत आग्रह और अनुरोध किए। आप तो खुदा के है, आपका तो हिन्दू-मुसलमान की राजनीति या भेद-भाव से कोई सम्बन्ध ही नहीं है... परंतु यज्ञ-वत्सों को तो यह ईश्वरीय आदेश था कि अब भारत में ही जाना है। स्टीमर से भारत के ओखा बंदरगाह आए। उन दिनों 400 के लगभग भाई-बहनें थे। पाकिस्तान के हजारों लोगों ने ब्रह्मा-वत्सों को पुष्प वर्षा एवं फूलमाला पहनाकर विदाई दी।

भारत में प्रवेश

यज्ञ-वत्स ओखा बंदरगाह पर उतरे। वहां से वे रेलगाड़ी द्वारा आबू आए। आबू पर्वत प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रही है। यहां का एकांत वातावरण योग-तपस्या के लिए उपयुक्त स्थान है। ओम-मंडली का कार्य अब यही से शुरू हुआ।

सदा सर्विस करना

बाबा ने सेवा पर भेजते समय हाथ हिलाते हुए कहा बच्ची, जहां भी जाना वहां सदा ही सर्विस, सर्विस और सर्विस करना। सचमुच बाबा ने जैसे कि मुझे वरदान दिया वैसी ही सेवा हुई। धन्य है मेरा जीवन जो भगवान को इन नयनों से निहारने और शक्ति प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

बीके शीला बहन, सबजोन प्रभारी गुवाहाटी, असम

परखने की अद्भुत शक्ति

बाबा में परखने की अद्भुत शक्ति थी। पार्टी के भाई-बहनों से मिलने के बाद बाबा बुलाकर हरेक की जन्मपत्री बता देते थे। बाबा ने मुझे कई बार सचली कौड़ी का टाइटिल भी दिया। बाबा से मुझे दो वरदान मिले। एक शेरनी शक्ति और दूसरा यज्ञसेवा में मददगार बनेगी।

बीके कृष्णा बहन, सबजोन प्रभारी अम्बाला कैंट

ब्रह्मा-वत्स 14 वर्ष रहे अज्ञात-वास

महाभारत में लिखा है कि पांडवों ने 12 वर्ष वनवास और 1 वर्ष अज्ञात-वास किया था। सिंध में 13 वर्ष तक, 1937 से लेकर 1950 तक 12 वर्ष लोगों से अलग (अज्ञात-वास) और फिर एक वर्ष उन्हीं लोगों के बीच अज्ञात रहकर इन अहिंसक पांडवों अथवा शिव-शक्तियों ने तपस्या की। इस प्रकार जब उन्होंने अपनी अवस्था को उच्च बना लिया, संस्कारों को बदल लिया, योग में स्थिति प्राप्त कर ली, तब ये ज्ञान-गंगा बनकर भारत को पतित से पावन बनाने के लिए चारों दिशाओं में निकली। मनुष्य को सच्चा गीता ज्ञान देकर उनके भटकते हुए मन को शांति दी और उनका वास्तविक परिचय दिया।.

ओम- मंडली से ब्रह्माकुमारीज़

पहले संस्था का नाम ओम मंडली था। बाद में परमपिता शिव परमात्मा के आदेशानुसार ब्रह्मा बाबा ने ओम् मंडली से संस्था का नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय अर्थात् परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों को ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ाते है। ब्रह्माकुमारीज का अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू पर्वत, राजस्थान में है। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय संयुक्त राष्ट्र संघ का एक स्वैच्छिक सेवा संगठन है। जिसे संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक परिषद में सार्वजनिक सलाहकार और यूनिसेफ में सलाहकार का दर्जा प्राप्त है। संस्थान को संयुक्त राष्ट्र ने 6 शांतिदूत पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया है। साथ ही राजयोग के माध्यम से मानवता के लिए उत्कृष्ट योगदान पर अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए है। संस्थान विश्वभर के 137 देशों में स्थित 8500 शाखाओं के माध्यम से मानव कल्याण के प्रति अपनी बहुमूल्य सेवाएं दे रहा है।

शांतिदूत दे रहे शांति का संदेश

ब्रह्माकुमारीज़ का उद्देश्य नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं विश्व शांति है। संस्था के प्रणेता युगपुरुष ब्रह्मा बाबा विश्व परिवर्तन के इस महान कार्य के संस्थापक है। जिन्होंने परमात्मा शिव के आदेशानुसार अज्ञान, अंधकार और विषय-विकारों से ग्रस्त दुनिया को पुन: सतयुगी दैवी दुनिया बनाने, नैतिक मूल्यों को विकसित करने, विश्व में पुन: शांति लाने के लिए यह बागडोर सौंपी। सृष्टि परिवर्तन के इस कार्य में ब्रह्माकुमार भाई-बहनों कदम से कदम मिलाकर विश्व के कोने-कोने में शिव संदेश दे रहे है।

लाखों के जीवन की बदली दिशा

इन शिव शक्तियों ने शांति के जो बीज बोए और उनसे जो पौधे निकले जो आज लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन के माध्यम बने है। सच्चा गीता ज्ञान सुनकर आज लाखों लोगों ने अपना जीवन पवित्र, शांतिमय, सुखमय, प्रेममय बनाया है। आज हजारों उदाहरण ऐसे है जिनका जीवन पहले नरकमय था जो आज दिव्यगुणों का गुलदस्ता बन गया है। राजयोग के नियमित अभ्यास से कई भाई-बहनों की डायबिटीज, ब्लडप्रेशर, हार्टअटैक, मानसिक तनाव, चिंता, भय, अवसाद आदि बीमारियों और बुराईयों से छुटकारा मिल गया है। अत: आप भी अपने जीवन को उच्च, शांतिमय, सुखमय बनाना चाहते है तो इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आपका स्वागत है.... अभिनंदन है....वंदन है.....।

भगवान ने ली निश्चय की परीक्षा

जैसे सुख के बाद दु:ख आता है तो ऐसा ही कुछ पार्ट यज्ञ के इतिहास में भी चला। वह समय आज ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। यह वह समय था जब सभी बच्चों की परमात्मा के ऊपर निश्चय की परीक्षा हुई। पाकिस्तान में तो बाबा ने सभी बच्चों को बहुत ही लाड़-प्यार से पाला था ताकि किसी को अपने घर की याद न आए। काजू-बादाम खिलाते थे। जैसे ही सभी लोग आबू में आए तो बेगरी पार्ट शुरू हुआ। फिर किसी को घर याद आया, किसी को रिश्ते-नाते, तो कुछ बहनों के घर से चिट्ठियां आने लगी कि वापस घर में आ जाओ कैसे अपना जीवन चलाओगे। जब बेगरी पार्ट चला तो बाबा सबको डोडा-छाछ खिलाने लगे। यह सभी के निश्चय का पेपर था। जो निश्चयबुद्धि थे वे रह गए और जो मन से कमजोर और कच्चे निश्चयबुद्धि थे वे चले गए। जो बच्चे रह गए उन्हें यह संकल्प तक नहीं आता था कि हम पहले क्या खाते थे और अब क्या खा रहे है। वे यही कहते थे कि बाबा जो भी कराए, जो भी खिलाए मुझे तो सिर्फ खुश रहना है। आज यज्ञ ने जो इतना विस्तार पाया है वह इन्हीं निश्चयबुद्धि बच्चों के बल पर। इसमें कुछ ऐसे भी बच्चे थे जो बहुत ही नाजों से पले थे और उन्हें दु:ख का एहसास तक नहीं था। जब बाबा की सच्चाई का उन्हें एहसास हुआ कि ब्रह्मा तन में स्वयं परमात्मा शिव बाबा आकर ज्ञान दे रहे हैं तो इसका बाद में उन्हें पछतावा भी बहुत हुआ, लेकिन अब हो क्या सकता था जब चिड़िया चुग गई खेत...।

आज भी ले रहे विश्व शांति के लिए प्रेरणाएं

आज भी माउण्ट आबू में देश-विदेश से हजारों लोग आते हैं और उनकी समाधि स्थल से विश्व शांति के लिए सूक्ष्म प्रेरणाएं लेकर जाते है। साथ ही अपने आसपास के वातावरण को भी शांतमय बनाने का प्रयास करते हैं।

ब्रह्मा बाबा का समाधि स्थल 'प्रकाश स्तम्भ' **इनसेट:** विश्व शांति के प्रणेता प्रजापिता ब्रह्मा बाबा।

दादा लेखराज से ब्रह्मा बाबा तक

पत्र लिखते हुए बाबा।

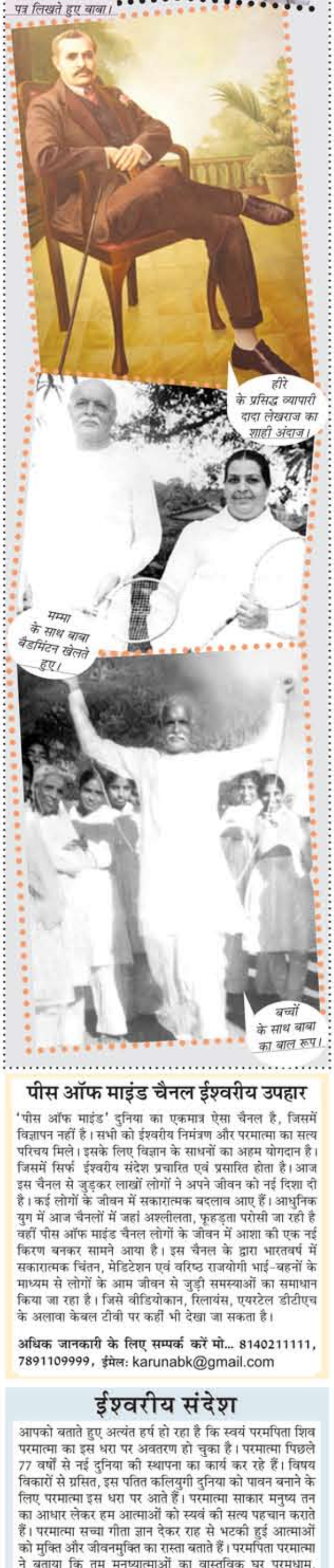

हीरे के प्रसिद्ध व्यापारी दादा लेखराज का शाही अंदाज।

मम्मा के साथ बाबा बैडमिंटन खेलते हुए।

बच्चों के साथ बाबा का बाल रूप।

पीस ऑफ माइंड चैनल ईश्वरीय उपहार

'पीस ऑफ माइंड' दुनिया का एकमात्र ऐसा चैनल है, जिसमें विज्ञापन नहीं है। सभी को ईश्वरीय निमंत्रण और परमात्मा का सत्य परिचय मिले। इसके लिए विज्ञान के साधनों का अहम योगदान है। जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित एवं प्रसारित होता है। आज इस चैनल से जुड़कर लाखों लोगों ने अपने जीवन को नई दिशा दी है। कई लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं। आधुनिक युग में आज चैनलों में जहां अश्लीलता, फूहड़ता परोसी जा रही है वहीं पीस ऑफ माइंड चैनल लोगों के जीवन में आशा की एक नई किरण बनकर सामने आया है। इस चैनल के द्वारा भारतवर्ष में सकारात्मक चिंतन, मेडिटेशन एवं वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनों के माध्यम से लोगों के आम जीवन से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। जिसे वीडियोकान, रिलायंस, एयरटेल डीटीएच के अलावा केबल टीवी पर कहीं भी देखा जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें मो... 8140211111, 7891109999, ईमेल: karunabk@gmail.com

ईश्वरीय संदेश

आपको बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि स्वयं परमपिता शिव परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। परमात्मा पिछले 77 वर्षों से नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। विषय विकारों से ग्रसित, इस पतित कलियुगी दुनिया को पावन बनाने के लिए परमात्मा इस धरा पर आते हैं। परमात्मा साकार मनुष्य तन का आधार लेकर हम आत्माओं को स्वयं की सत्य पहचान कराते हैं। परमात्मा सच्चा गीता ज्ञान देकर राह से भटकी हुई आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। परमपिता परमात्मा ने बताया कि तुम मनुष्यात्माओं का वास्तविक घर परमधाम, निर्वाणधाम, ब्रह्मलोक है। तुम्हारा वास्तविक घर वहीं है। इस सृष्टि पर तुम आत्माएं अपने ड्रामा अनुसार पार्ट बजाने आती हो। अब फिर मैं तुम्हें वापस ले जाने आया हूं। इसलिए इस अज्ञान निद्रा से जागो और 21 जन्मों के राज्य भाग्य का वर्सा मुझसे लेकर अपना भाग्य बनाने का सुअवसर है। गीता में भी भगवान ने कहा है कि मैं कल्प-कल्प के संगमयुगे आते हूं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता:

प्रकाशक: ब्रह्माकुमार करुणा द्वारा मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन विभाग ब्रह्माकुमारीज़ के लिए प्रकाशित एवं डीबी प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: मोबाइल 9413384884, 9414156615, 9414193999 फोन: 02974-228230, Email: bkmediaprhq@gmail.com